# मैथिल ब्राह्मण संदेश

मैथिल ब्राह्मणों की प्रमुख मासिक पत्रिका

कार्यालयः गली नं 4, ज्वालापुरी, अलीगढ़–202001 (उ0प्र0) मोबाईल नं0:9760689055

Whatsapp: 9259647216 (मैथिल ब्राह्मण संदेश ग्रुप), Paytm Account: 9259647216

Regd.: U.P.H.W. 23124/24-01-06 T.C. Dated: 30-08-1996

वर्ष–8, अंक–81–82 www.maithilbrahminmahasabha.in नवम्बर–दिसम्बर –2020



## संरक्षक

1. रघुवीर सहाय शर्मा ''मैथिलेन्दु'' एम0ए0बी0एड0 साहित्य रत्न
   राष्ट्रीय संयोजक,राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा (Mob) 9411212100
2. श्रीमती गायत्री देवी शर्मा, अलीगढ़ (Mob) 9058532152
3. रमेश चन्द्र शर्मा, दिल्ली, (Mob) 9312942251
4. सत्यप्रकाश शर्मा, आगरा, (Mob) 9219636927

## प्रधान सम्पादक

1. जयप्रकाश शर्मा, अलीगढ़, (Mob) 6395577830
   एम0एस–सी0(वाटनी), एम0ए0(राज0), पूर्व प्रधानाचार्य

## प्रबन्ध सम्पादक

1. चन्द्रदत्त वैद्य, आयुर्वेदाचार्य, (Mob) 9760689055
   स्वर्ण पदक प्राप्त (पंचगव्य चिकित्सा) (अलीगढ़)

## सम्पादक मण्डल

| | | |
|---|---|---|
| 1. रमेश चन्द्र शर्मा | (झाँसी) | (Mob) 9936526677 |
| 2. राजेन्द्र प्रसाद शास्त्री | (आगरा) | (Mob) 9760746099 |
| 3. के0एस0 शर्मा | (मथुरा) | (Mob) 8630285841 |
| 4. पं0 पूरन चन्द्र शास्त्री | (अलीगढ़) | (Mob) 9412442343 |
| 5. डा.उपेन्द्र झा 'मैथिल' | (हाथरस) | (Mob) 9837484645 |
| 6. कोमल प्रसाद शर्मा | (बिसावर) | (Mob) 9719247433 |
| 7. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा | (फ0बाद) | (Mob) 9810195234 |
| 8. हरीशंकर मिश्र | (फि0बाद) | (Mob) 9927383141 |
| 9. अशर्फी लाल शर्मा | (अवागढ़) | (Mob) |
| 10. डा0 शिवशंकर मैथिल | (कासगंज) | (Mob) 7906476964 |



## मुद्रक एवं प्रकाशक

स्वामी मैथिल ब्राह्मण सेवा–शिक्षा–संस्कार ट्रस्ट अलीगढ़ की ओर से प्रकाशक एवं सम्पादक जयप्रकाश शर्मा, 1/567–एच, गंगा बिहार, सुरेन्द्र नगर, अलीगढ़ द्वारा लिथो कलर प्रिन्टर्स, अचल तालाब, जी0टी0 रोड, अलीगढ़ से मुद्रित एवं प्रकाशित।

कम्प्यूटर ग्राफिक्स– राहुल मिश्र, अलीगढ़

MAITHIL BRAHMIN YouTube

## अनुक्रमणिका


| विषय | पेज नं. |
|---|---|
| मिथिला वन्दना | 2 |
| सम्पादकीय | 3 |
| तथाकथित मैथिल ब्राह्मणों का बोलता... | 4 |
| बृज में मैथिल ब्राह्मणों के 10 गोत्रों का... | 6 |
| यदि आप मिथिला के बृजस्थ मैथिल..... | 7 |
| मैथिल ब्राह्मण समाज में व्याप्त ..... | 8 |
| प्रज्ञाचक्षु मैथिल महाकवि पं. घूरेलाल झा | 9 |
| अक्षय तृतीया को ब्रह्मानन्द सरस्वती... | 10 |
| मिथिला के ब्राह्मणों का बृज में आने.... | 11 |
| श्रीरामशलाका प्रश्नावली | 13 |
| स्वास्तिक का प्रयोग मंगलकारी या.... | 15 |
| शब्द संभाल कर बोलिये | 16 |
| सुख शान्ति हेतु यह.... | 17 |
| क्यों करते हैं परिक्रमा | 18 |
| मसूड़ों की बीमारी से | 19 |
| मेरी श्री श्री 84 कोस .... | 20 |
| पैसा रखें जहां, वहां..... | 22 |
| लक्ष्मी प्राप्ति में झाड़ू ..... | 23 |
| जैतून तेल से सौन्दर्य | 24 |
| योगासन से खुद को रखें सेहतमंद | 25 |
| सत्य बोलो | 26 |
| लौटना कभी आसान नहीं होता | 27 |
| जागरण | 28 |
| मै.ब्रा. संदेश वार्षिक सदस्य/समाचार | 29 |
| मैथिल ब्राह्मण संदेश पत्रिका वितरण. | 30 |
| वर कन्या सूची | 31 |

## –:वंदना:–

शारदा शरदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदासमाकमं सन्निधं सन्निधं क्रियात।।
सरस्वती च तां नौमि वागधिष्ठातृदेवतां।
देवत्व प्रतिपद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः।।

**यह अंक नवम्बर व दिसम्बर का संयुक्तांक है। इस अंक के साथ एक पुस्तक निःशुल्क अवश्य प्राप्त करें।**

## –:मिथिला वंदना:–

नित्यस्थलि नित्यलीले नित्यसधाम नमोअस्तु ते।
धन्या त्वं मिथिले देवि ज्ञानदे मुक्तिदायिनि।।
राम स्वरूपे वैदेहि सीताजन्मप्रदायिनि।
पापविध्वंसिके मातार्भवन्धविमोचनि।।
यज्ञदानतपोध्यानस्वाध्यायफलदे शुभे।
कामिनां कामदे तुभ्यं नमस्यामों वयं वदा।।

## –:पत्रिका सम्बन्धी नियम:–

- पत्रिका की एक प्रति का शुल्क 10/–रू, वार्षिक शुल्क 120/– है। 2500/– (एक या दो बार में) देकर पत्रिका के संरक्षक सदस्य बन सकते हैं।
- पत्रिका के विविध स्तम्भों में सहयोग करने के अतिरिक्त सम्पादक मण्डल के सदस्यों को अपने क्षेत्र में पत्रिका के कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है।
- व्यक्तिगत अथवा किसी संगठन सम्बन्धी आलोचनात्मक लेख नहीं छापे जा सकेंगे। केवल रचनात्मक, सकारात्मक एवं समाजोत्थान सम्बन्धी लेख ही छापे जायेंगे।
- जो लेख नहीं छापे जा सकेंगे, उनको लौटाने की जिम्मेदारी सम्पादक मण्डल की नहीं होगी। लेखक की राय सम्पादक मण्डल की राय से मिलना आवश्यक नहीं है।
- पत्रिका के सम्बन्ध में सुझाव एवं समीक्षा सादर आमंत्रित हैं।
- पत्रिका में विज्ञापन के लिये कवर पेज चार कलर में तीन माह के लिए 2 हजार रूपये तथा अन्दर का आधा पेज एक माह के लिए 500/– देय होगा।
- वर–कन्या की सूचियाँ एवं लेख कार्यालय के पते अथवा मैथिल ब्राह्मण संदेश के व्हॉटसएप नं. 9259647216 पर ही स्वीकार किये जायेंगे।
- पत्रिका में प्रकाशित लेख–लेखक के अपने व्यक्तिगत विचार होते हैं। पत्रिका के सम्पादक मण्डल का उन विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- आप अपने लेख (स्वास्थय सम्बन्धी, विवाह सम्बन्धी, सवाल–जबाब, समाज से सम्बन्धित लेख, कहानी इत्यादि) हमें व्हॉटसअप कर सकते हैं।
- आप लेख, जन्मदिन या शादी की वर्षगांठ इत्यादि के साथ–साथ अपना मोबाईल नम्बर अवश्य भेजें, बिना मोबाईल नम्बर के लेख इत्यादि अस्वीकार कर दिये जायेंगे।

# संपादकीय

कोरोना महामारी ने पूरे विश्व को प्रभावित किया, हमारा भारत भी इसकी चपेट में आ गया, इसलिये लॉकडाउन लगाना पड़ा जिससे कि लगभग चार महीने तक सारे व्यवसाय बन्द रहे। मैथिल ब्राह्मण संदेश पत्रिका भी इससे प्रभावित हुई। हमारा पिछला अंक मार्च २०२० में प्रकाशित एवं वितरित हुआ, अब अनलॉक होने पर पत्रिका पुनः प्रकाशित की जा रही है, हमें विश्वास है कि पाठकगण पत्रिका को पुनः पूर्ण सहयोग देंगे। दुखद यह भी है कि कार्यकारी प्रधान सम्पादक डॉ० मोरमुकुट शर्मा का इसी कोरोनाकाल में हृदयगति रूकने से निधन हो गया।

पत्रिका विचारों के आदान-प्रदान, समरसता एवं समाज को संगठित करने का सहज मार्ग है। विचार रसमाज को संगठित एवं संघर्षशील करने का साधन है। वही समाज प्रगति करते हैं, जिनमें संगठित होकर संघर्ष की शक्ति होती है। मैथिल ब्राह्मण महासभा संगठन भी समाज को इसके लिये प्रयत्नशील रहता है। पत्रिका का प्रचार एवं प्रसार करना पत्रिका परिवार के साथ सहयोगी पाठकों का भी दायित्व बनता है।

दीपोत्सव आपके लिये शुभ हो, महालक्ष्मी जी की आप पर सदा कृपा रहे, कुबेर जी आपके भण्डार भरे, आप सभी सपरिवार स्वस्थ एवं पुष्ट रहे। ऐसी पत्रिका परिवार की सुधी पाठकों को हार्दिक शुभकामनायें हैं। हाँ वायुमण्डल को प्रदूषण से बचाने के पूरे प्रयास करें।

आज स्वस्थय रहने की सर्वोत्तम औषधि योग है। पतंजलि का योग दर्शन वैानिक एवं व्यवहारिक है तथा स्वास्थ्य लाभ के लिए इसकी उपादेयता, सार्थकता एवं महत्ता असंदिग्ध है। अतः कोरोना से रक्षा करने के लिए घर में रहे, हाथ २० सेकेण्ड तक बार-बार धोयें, मुंह, नाक, आंख का स्पर्श न करें, मास्क लगायें, सेनेटाइजर का प्रयोग करें। सामाजिक संगठनों से और भीड़ से दूर रहकर संक्रमण से आप बचकर कोरोना का विनाश कर सकते हैं।

**- जयप्रकाश शर्मा**

**प्रधान सम्पादक**

# तथाकथित मैथिल ब्राह्मणों का बोलता डी.एन.ए.

**प्रकृति एवं इतिहास अपने आपको दोहराता है, क्योंकि मैं जीव विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण जानता हूँ कि मनुष्य में .....**

**जयप्रकाश शर्मा**
''सेवानिवृत प्रधानाचार्य''
अलीगढ़।

आज से लगभग ८०० वर्ष पहले मिथिला से ब्राह्मण बृज में आये थे। मिथिला से जो ब्राह्मण, बृज में आये, वह कई खेपों में आये थे और अलग-अलग समय में आये थे। मिथिला से आये इन ब्राह्मणों ने दाराशिकोह तक यानि ४०० वर्ष तक मिथिला की परम्पराओं का पालन किया अर्थात् वेदों का पठन-पाठन, कर्मकाण्डी, धर्म, अनुष्ठान, ज्योतिष, मीमांसा के ज्ञाता व नीतियों के मर्मज्ञ बने रहे। इतिहास इसका सबसे बड़ा अकाट्य प्रमाण है। सन् १६६६ में शाहजहां की मृत्यु के बाद औरंगजेब भारत का सम्राट बना, औरंगजेब हिन्दुओं का कट्टर दुश्मन था, उसने भारत के सभी बड़े मन्दिरों को तहस-नहस कर दिया और तलवार के बल पर हिन्दुओं को और हिन्दुओं में भी विशेषकर मिथिला के ब्राह्मणों को मुसलमान बनाया जाने लगा।

औरंगजेब ने राजदरबार में अपने पूर्वजों द्वारा नियुक्त ब्राह्मण राज दरबारियों को मुसलमान बनने पर बाध्य किया, और उनके मना करने पर मृत्यु का भय दिखाया जाने लगा। ऐसी कठिन परिस्थितियों में आगरा राजदरबार में नियुक्त मिथिला के ब्राह्मण इधर-उधर छिप गये। मिथिला के ब्राह्मण विशेष वेशभूषा एवं भाषा के कारण तुरन्त पहचान लिये जाते थे, इसलिए उनकी पहचान न हो सके, इसलिए वे आगरा से दूर गांवों जंगलों में छिप गये। उस समय बृज में निश्चय ही अनेक काष्ठकार रहे होंगे, जो यहां के किसानों के उपकरण या मरम्मत करने का कार्य करते रहे होंगे। और इन्हीं काष्ठकारों ने शायद मिथिला के ब्राह्मणों को अपने यहां छुपाया होगा और बाद में, वे इन्हीं में घुल मिल गये होंगे।

कुछ समय तक वेशभूषा और भाषा का कारण बृज के काष्ठकारों और मिथिला के ब्राह्मणों में भेद रहा होगा। और धीरे-धीरे पीढ़ियां बदलती गई और समय लम्बा होने के कारण आपसी पहचान भी नष्ट हो गई और इस तरह सैकड़ों वर्षों तक साथ रहने के कारण बृज के कुछ काष्ठकारों और मिथिला के ब्राह्मणों में घालमेल हो गया होगा और वर्तमान में घालमेल की ये खिचड़ी ऐसी बन गई है कि जिसमें से चावल और दाल को अलग करना असम्भव सा प्रतीत होता है।

प्रकृति एवं इतिहास अपने आपको दोहराता है। क्योंकि मैं जीव विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण जानता हूँ कि मनुष्य में गुणों का संवहन जीन तथा इसमें व्याप्त डी०एन०ए० करते हैं। इनके कारण ही आदमी की प्रकृति और प्रवृति बनती है। क्योंकि आज मैथिल ब्राह्मण समाज के अनेक लोग पिछड़े वर्ग और बी०सी० का प्रमाण पत्र लेकर अपने आप को काष्ठकार घोषित कर रहे हैं। आगरा राजदरबार से जो ब्राह्मण आपत्तिकाल में बृज में आये थे, उनमें बृज के स्थानीय काष्ठकार अपने को उच्च प्रदर्शित करने के लिए इनमें घुस गये होंगे, **आज उनका ही डी०एन०ए० बोल रहा है कि तुम स्वभाव से जैसे पहले थे, वैसे ही रहो और तुम उसी श्रेणी, उसी कैटेगरी में आ जाओ, जिसमें तुम पहले थे।** इसलिए उनकी कोई गलती नहीं है, वे लोग तो डी०एन०ए० के कारण ही उसी जाति में

जा रहे हैं, जिसमें कि वे वास्तव में थे।

मिथिला की ब्राह्मण जाति को तो इस बात का क्षोभ है कि आपत्तिकाल के समय इन काष्ठकारों से घालमेल होकर रिश्तेदारियां हो गई और इन्होने शुद्ध मैथिल ब्राह्मणों को भी अपवित्र कर दिया। इसका प्रायश्चित तो उनको करना ही पड़ेगा, और इसका एकमात्र मार्ग है, ऐसे दगावाजों से सम्बन्ध विच्छेद। और मिथिला से आये सभी ब्राह्मणों को अपने घरों में सौ यज्ञ करवाकर मिथिला की वागमती नदी में स्नान करना चाहिये। तभी तो कहा जाता है कि - **डी०एन०ए० बोलता है।**

******

## आवश्यक सूचना

- मैथिल ब्राह्मण सन्देश पत्रिका का वर्ष जनवरी से दिसम्बर तक रहेगा, अतः आप पत्रिका का शुल्क दिसम्बर मास में पत्रिका कार्यालय अथवा क्षेत्रीय प्रतिनिधि के पास जमा करा दें।
- पत्रिका यदि आपको समाज के संगठन में उपयोगी दिखाई देती हो तो इसके प्रचार-प्रसार में सहयोग करें। पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाने में क्या हो सकता है, इसके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।
- पत्रिका के केवल वार्षिक सदस्य ही बनाये जाते हैं, आजीवन नहीं। पत्रिका की एक प्रति १० रू० व वार्षिक शुल्क मात्र १२०/- है। जो बन्धु पत्रिका को बुक पोस्ट (डाक द्वारा) से मंगाना चाहते हैं तो उन्हें ६०/- रू० अतिरिक्त जमा कराने होंगे।
- बन्धुओं आज पत्रिका आर्थिक संकट से गुजर रही है। एक तो कोरोना महामारी के कारण पत्रिका प्रदेश व देश के अन्य भागों तक पहुंचाने में कठिनाई के कारण प्रसार संख्या कम होती जा रही है। दूसरी पत्रिका का प्रकाशन का व्यय एकदम बढ़ गया है, पत्रिका लगभग १६ रूपये में तैयार होती है, जो आपको १०/-रू० में दी जाती है।
- पत्रिका संगठन ६ रूपये का यह आर्थिक घाटा इसलिए उठा रहा है कि पत्रिका समाज के अधिकाधिक बन्धुओं तक पहुंचे, यह घाटा आपके थोड़े से प्रयास से पूर्ण हो सकता है। इस हेतु आप अपने माध्यम से पत्रिका के अधिकाधिक वार्षिक सदस्य बनाने, शादी विवाह एवं शुभ अवसरों पर पत्रिका को दान दें, व पत्रिका में विज्ञापन देकर सहयोग कर सकते हैं।

**- चन्द्रदत्त वैद्य (प्रबन्ध सम्पादक)**

SUBSCRIBE

YouTube

**MAITHIL BRAHMIN**

**आप यू-टूब मैथिल ब्राह्मण चैनल पर अवश्य देखें कि- मैथिल ब्राह्मणों को एक ही गोत्र में विवाह क्यों नहीं करना चाहिए।**

# बृज में मैथिल ब्राह्मणों के 10 गोत्रों का इतिहास

सारस्वताः कान्यकुब्जा गौड़ उत्कल मैथिलाः।
पंच गौड़ा इति ख्याता विन्ध्यस्योत्तरवासिनः।।
**(ब्राह्मण उत्पत्ति मार्तण्ड)**

**पं.राहुल मिश्र**
ज्वालापुरी, अलीगढ़।
मोः 9259647216

ब्राह्मण उत्पत्ति मार्तण्ड के अनुसार सम्पूर्ण ब्राह्मण जाति में कुल १० प्रकार के ब्राह्मण हैं। १० ब्राह्मणों के कुल २५ ऋषि गोत्र हैं और इनमें मैथिल ब्राह्मणों के १५ ऋषि गोत्र हैं, जो कि निम्न प्रकार हैंः- पाराशर, भारद्वाज, शाण्डिल्य, काश्यप, कौन्डिल्य, विष्णुवृद्धि, कात्यायन, कृष्णात्रेय, वशिष्ठ, कौशिक, सावर्णय, गौतम, मौद्गल्य, गार्ग्य वत्स।

मिथिला में इन १५ ऋषियों ने अपने नाम से ऋषि गोत्र चलाये, ताकि किसी बहन-भाई की आपस में शादी न हो सके। अपने आपत्तिकाल के समय में मिथिला से बृज (अलीगढ़, हाथरस, मथुरा, आगरा....) में १० ऋषि गोत्रों के मैथिल ब्राह्मण आये थे। आपत्तिकाल में जो मैथिल ब्राह्मण बृज में आये, अब वह लोग अपने बच्चों की शादियां ऋषिगोत्र बताकर नहीं कर रहे हैं, बल्कि अपना खेड़ा बताकर करते हैं। खेड़ा उसे कहते हैं- जब मैथिल ब्राह्मण मिथिला से बृज में आये और बृज में जिन स्थानों, ग्रामों में रहे, वह उनके खेड़े कहलाये।

अब बृज में ६०-७० प्रतिशत मैथिल ब्राह्मण वर्तमान में अपने बच्चों की शादियां तय करते हैं तो वह किसी से यह नहीं पूछते हैं कि आपका ऋषि गोत्र क्या है? बल्कि यह पूछते हैं कि आपका गांव कौन सा है, अर्थात आपका खेड़ा कौन सा है ? और उन्होने अपना गांव उनके गांव से अलग बता दिया तो झटपट ही वह शादी कर देते हैं, वह ये नहीं देखेंगे कि उनका ऋषि गोत्र एक ही है या अलग। क्योंकि एक ही ऋषि गोत्र की सन्तानें ५, १०, २० गांवों में रहती हैं तो वह आपस में बहन भाई ही हैं। और ऐसे लोग केवल अलग गांव देखकर ही शादी कर देते हैं और जाने अनजाने में वह बहन-भाई की शादी कर देते हैं, और जिसके जिम्मेदार वे स्वयं ही हैं। हमने पिछले लेख में बताया था कि किस तरह एक ही गोत्र में शादी करने से व्यक्ति शास्त्रतः चाण्डाल हो जाता है। एक ही गोत्र में शादी करने से व्यक्ति चाण्डाल हो जाता है इसका वीडियो आप हमारे यूटूब-चैनल मैथिल ब्राह्मण पर देख सकते हैं।

**विशेषः शादी तय करने हेतु सर्वप्रथम आप उनसे ऋषि गोत्र ही पूछें, अगर उनका और आपका ऋषि गोत्र अलग है, तब ही आप शादी की बात करें। तत्पश्चात आप खेडा, मूलग्राम, प्रवर, वेद, पाद, शिखा इत्यादि पूछें।**

******

एक संत के तप, त्याग और ज्ञान की चर्चा सुनकर राजा ने उन्हें आमंत्रित किया। उनके आगमन पर मार्ग में मूल्यवान कालीन बिछा दिए गए। संत कीचड़ सने पाँवों से उन्हें गंदा करते हुए उस राजा तक पहुँचे। मंत्री से न रहा गया, वह इसका कारण पूछ बैठा। संत बोला- ''राजा को अपने राजपद का गर्व है। उसको प्रदर्शित करने के लिए बिछे कालीनों को गंदा कर मैं उसका अहंकार चूर-चूर कर रहा हूँ।'' ''किन्तु भगवन्! अहंकार से अहंकार कैसे चूर होगा?'' मंत्री के इस प्रश्न ने उन्हें निरूत्तर कर दिया औश्र वे अपनी भूल सुधारने के लिए वापिस लौट पड़े।

अहंकार चाहे वैभव का हो अथवा त्याग का, समान रूप से दोनों ही दोषपूर्ण हैं।

# यदि आप मिथिला के बृजस्थ ब्राह्मण हैं तो इसे अवश्य पढ़ें

– **चन्द्रदत्त वैद्य,** अलीगढ़

**पण्डितों की सभा में यदि एक मैथिल पण्डित भी बैठा होगा तो वह अपने वेश के कारण अलग दिखाई देगा। साधारण सफेद धोती, बारहतनी की बगलबन्दी, गले में दुपट्टा व सिर पर छत्तेदार पगड़ी। मैथिली पगड़ी हमारी आन-बान-शान की पहचान है। मिथिला के बृजस्थ ब्राह्मणों के सिर से पगड़ी क्यों हट गई.....।**

300 वर्ष के मुगल शासकों के अत्याचारों से त्रस्त होकर, मिथिला के अधिकाधिक ब्राह्मणों ने प्राणों एवं धर्म रक्षार्थ देश में विभिन्न भागों में विशेषतः बृज के ग्रामीण अंचलों मे यत्र–तत्र वेश बदल कर रहने के कारण भाषा, खानपान, संस्कृति व वेश सब कुछ बदल गया। आज आवश्यकता है। हमें अपनी वेशभूषा को पुनः अपनाने की, यदि सम्पूर्ण वेश सम्भव न हो तो कम से कम पगड़ी को अवश्य ही प्रयोग में लावें, संकोचवश यदि पगड़ी प्रतिदिन प्रयोग न करें तो कम से कम अपने धार्मिक त्यौहार, सामाजिक कार्यक्रम शादी–समारोह में प्रयोग करें, यह भी सम्भव न हो तो बच्चे के विवाह संस्कार अवसर पर घुड़चढ़ी, कुआं पूजन व पाणिग्रहण अवसर (भांवर) पर अवश्य ही प्रयोग करें। जब समाज के विभिन्न वर्ग अपनी परम्परानुसार पगड़ी में चमड़े का टुकड़ा, खजूर का मुकुट राजस्थान में अपनी–अपनी परम्परानुसार सामान्य दिनों में/विवाह संस्कार अवसर पर भिन्न–भिन्न पगड़ियों का प्रयोग करते हैं तो हम क्यों नहीं पाणिग्रहण (भांवर) अवसर पर मैथिली पगड़ी का प्रयोग कर सकते, बस आचार्यों की प्रेरणा, अपना आत्मबल व थोड़े से प्रचार की आवश्यकता है।

**पगड़ी प्रचार–प्रसार हेतु कार्य योजना–** समाज के कोई भामाशाह बन्धु अपना धन व्यय कर 100 पगड़ी बनवाकर रखे, पगड़ी का नमूना प्रत्येक जिले में 2–4 बन्धुओं पर मैथिली पगड़ी मिल जावेगी, नहीं तो दरभंगा में आम पगड़ी की दुकानों पर मैथिली पगड़ी मिल जाती है, फिर भी कोई असुविधा हो तो मैथिल ब्राह्मण महासभा के प्रान्तीय कार्यालय में सम्पर्क कर सकते हैं। वह आपको 50 से 75 रू0 में सामान्य स्तर वाली पगड़ी व 100 से 150 रू0 में विशेष आकर्षक विवाह संस्कार हेतु उपलब्ध करा देंगे।

**विवाह संस्कार में पगड़ी का प्रयोग–** आचार्य, पोरोहित्यगण पगड़ी प्रचार हेतु बहुत सहयोगी हो सकते हैं। जैसे ही यजमान आचार्य/पोरोहित्य जी से बच्चे के विवाह हेतु लग्न आदि के लिए आता है, तभी आचार्यगण पगड़ी का महत्व बताते हुए प्रेरित करें कि बारात चढ़त व भाँवर समय मैथिली पगड़ी अवश्य प्रयोग करें। अच्छा रहे निर्धारित शुल्क पर आचार्य स्वयं पगड़ी उपलब्ध करावे। वर के पहनने के कपड़ों के साथ पगड़ी का भी पूजन करावे, पश्चात कूआं पूजन व भाँवर समय मैथिली पगड़ी सिर पर अवश्य रहे।

पगड़ी के साथ फोटोग्राफी हो, यदि आचार्यों ने थोड़ा प्रयास किया तो कोई कारण नहीं हमारी मैथिल पगड़ी को प्रतिष्ठा न मिले। परम्परा हमेशा ऊपर से नीचे आती है। अतः अपने समाज के उच्च वर्ग के बच्चे विवाह संस्कारों के अवसर पर प्रयास कर मैथिली पगड़ी का प्रतीक रूप से भांवर समय प्रयोग, यदि हम करा पायें तो सारा समाज उनका अनुगमन करने लगेगा।

******

# मैथिल ब्राह्मण समाज में व्याप्त विसंगतियाँ

**धन बैंको में तो एकत्रित हो रहा है, परन्तु समाज के लिए उसका कोई रचनात्मक सहयोग नहीं है। .....**

**जयप्रकाश शर्मा**
''सेवानिवृत प्रधानाचार्य''
अलीगढ़।

जैसे-तैसे अपना समाज धन वैभव तथा बौद्धिक रूप में बढ़ा है, वैसे-वैसे इसमें अनेकानेक विसंगति स्वमेव उत्पन्न होती जा रही है। आज समाज में अपनापन जैसे एक किनारे की ओर बढ़ता जा रहा है, चूंकि भावनाऐं अपनेपन से ही विकसित एवं प्रयोगात्मक रूप लेती हैं, यह सब शून्यता की ओर बढ़ रहा है। आज समाज में दिखावा, बड़प्पन एवं अभिमान की आंधी सी चल पड़ी है, नव धनाढ्य अर्नगल कार्यों में धन का अपव्यय करते हैं। रचनात्मक कार्यों में नहीं ? समाज में अनेक संगठन हैं, कुछ तो बहुत प्रभावशाली है, समाज की धन बल की बैक उनके काबू में है, परन्तु कहीं भी कोई कार्यालय किसी संगठन पर नहीं है। धन की तीन गतियां दान, भोग व नाश है, धन बैंकों में तो एकत्रित हो रहा है, परन्तु समाज के लिए उसका कोई रचनात्मक सहयोग नहीं है।

प्रत्येक कार्यक्रमों में संगठनों में धन एकत्रित किया जाता है और कुछ धनाढ्य एवं एक सी राजनैतिक विचारधारा के लोग उसको अपनी तरह उपयोग करते हैं, जिसका समाज को कोई लाभ नहीं होता। हम अपने आपको मिथिला के प्रवासी कहते हैं। परन्तु कितने कार्यक्रम मिथिला के नाम पर यहां होते हैं, कभी सीता जयन्ती, याज्ञवल्क्य जयन्ती, राम विवाह, छट पूजा, हमारा मिथिला से बृज आगमन दिवस मनाया गया है, शायद गिना चुना अथवा नहीं ? वहां के प्रवासी होने पर वहां के कार्यक्रम, व्रत, त्यौहार, पंचाग आदि का प्रयोग नहीं ? क्या यह असंगतियां नहीं है, क्या किसी संगठन ने देवनागरी लिपि में मैथिल भाषा सीखने, बोलने किसी को सिखाने का प्रयास किया है नहीं ? संभवतः इसीलिए हम अपने मौलिक रूप में प्रकट नहीं हो पाये हैं। यह विडम्बना है और जब तक यह सब ठीक नहीं होगा, तब तक हम अपनी वास्तविक स्थिति में नहीं पहुँच पायेंगे और जब के तस बन रहेंगेग, क्योंकि वहाँ के तीर्थ व्रत करने पर आपसी समरसता व अपनापन बढ़ेगा। विसंगतियां तथा असंगतियां सभी दूर होगी और वास्तव में जो है, समस्त समाज हमें उसी तरह से पहचानेगा, क्योंकि हमारे समाज में अन्य बृज के समाजों से कुछ विभिन्नतायें होगी और वह हमारे वास्तविक रूप को समझेंगे।

******

www.maithilbrahminmahasabha.in **पर अपना वंश विवरण अवश्य अपलोड करायें। जिसमें आपका लगभग १०० वर्षों का वंश परिचय मूलग्राम, खेडा, ऋषि गोत्र, फोटो मय परिवार वंशावली इत्यादि सहित अपलोड किया जायेगा।**

**आप यू-टूब मैथिल ब्राह्मण चैनल पर अवश्य देखें कि- मैथिल ब्राह्मण मिथिला से बृज में कब, क्यों और कैसे आये।**

# प्रज्ञाचक्षु मैथिल महाकवि पं. घूरेलाल झा 'सूर'

प्रज्ञाचक्षु मैथिल महाकवि सूर का जन्म मथुरा जनपद की सादाबाद तहसील के सलेमपुर ग्राम में धर्मनिष्ठ कृषक परिवार में पं० खुशाली राम झा के यहां अश्विन कृष्ण चतुर्थी शनिवार विक्रम संवत् १९४७ को हुआ था। माता का नाम श्रीमती हंसकौर था। मात्र ढाई वर्ष की आयु में ही उनके चेचक निकलने से नेत्र ज्योति सदैव के लिये जाती रही।

शनैः-शनैः सूर दंगलों में अपनी काव्य प्रतिमा का प्रदर्शन कर ख्याति प्राप्त करने लगे और पुरस्कार प्राप्त करने लगे। वह आशु कवि थे, अतः समस्या पूर्ति करने में अत्यन्त प्रवीण थे। उनके मस्तिष्क में कारू रूप स्वतः स्फूत था, जिसे वह पास वाले व्यक्ति से बोल-बोल कर लिपिबद्ध करा लेते थे। तदुपरान्त फिर उसे सुनते थे और लिपिबद्धकर्ता से यदि कोई त्रुटि हुई हो या कोई संशोधन होता था तो उसे शुद्ध कर देते थे।

जीवन के कुछ वर्ष सूर ने झांसी में व्यतीत किये थे। वहां देश भक्तिपूर्ण रचनायें भी रची थी। सामाजिक कुप्रथाओं में जनशिक्षा पर भी काव्य रचना की। महाकवि को छन्द शास्त्र का बहुत अच्छा ज्ञान था। अपने सोरठा, सवैया, कवित्त, दोहा, चौपाई, सार, कीचक आदि छन्दों में रचनायें लिखी हैं। छन्दों का वैविध्य उनके काव्य की विशेषता थी। अलंकारों का प्रयोग भी बहुतायत में मिलता है। सूर ब्रजभाषा के शिल्पी थे। भाषा पर उनका असाधारण अधिकार था। ब्रजभाषा में यत्र-तत्र संस्कृतनिष्ठ तथा उर्दू, फारसी, अरबी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग भी निःसंकोच किया है।

महाकवि सूर ने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया है, जिनमें महाभारत सूर समस्यावली, सूरसिंधु, सूर शिरोमणी, दोहावली, अलंकार, कौमुदी आदि उल्लेखनीय है। महाभारत महाकवि सूर का विशिष्ट काव्य है, जो १४ पर्वों में विभक्त है। महाभारत काव्य में दोहा, रोला, त्रोटक, सोरठा, मधुमालती, विमोहा, हरिगीतिका, छंद बाला (मात्रिक), छंदो पंच चामर, सार छंद, वर्णिक शूर-छन्द, चौपाइ, प्रामाणिक छंद, मंत्रगयन्द छंद, रूपमाला (मात्रिक छंद) मनहर छंद, मातृक तोमर छंद, मल्लिका दोहा, मल्लिका छंद, बरवै छंद (मात्रिक), पद्धारिक, छंद, भुजंग प्रयात छंद का सफल प्रयोग किया है।

ब्रज के प्रज्ञाचक्षु मैथिल महाकवि सूर एक अप्रतिम काव्यशिल्पी थे, जो काव्य जगत में दीर्घकाल तक गुमनामी में ही रहे, और १५ नवम्बर १९४८ को स्वर्गवासी हो गये परन्तु फिर भी उनका काव्य वांगमय में नहीं आ पाया। अंततः ०१.०२.१९८८ ई. में मृत्यु के ५० वर्ष बाद उनका महाकाव्य महाभारत ब्रम्हा परिवार के उत्कृष्ट विद्वान एवं सम्पादकाचार्य पं. प्रेमदत्त मिश्र मैथिल ने एक लम्बे संघर्ष, पत्राचार सम्पर्क व खोज के उपरान्त ही ब्रज की अप्रतिम प्रतिभा सूर को साहित्य प्रेमियों के समक्ष उनके महाकाव्य को प्रकाशित कराकर पुण्य अर्जित किया, जिसके लिये काव्य जगत सदैव आभारी रहेगा।

******

**मैथिल प्रवाहिका- मासिक पत्रिका २०१४ से साभार**

## ब्राह्मणों के कर्म

अध्ययनं अध्यापनं च यजनं याजनं तथा।
दान प्रतिग्रहश्चेव ब्राह्मणा नाम कल्पयत।। (मनुस्मृति)

विद्या पढ़ना, विद्या पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान लेना, दान देना यह छः कर्म ब्राह्मणों के बताए गए हैं।

# विशेषः अक्षय तृतीया ब्रह्मानन्द सरस्वती जयन्ती

– **पं० भुवनेश शास्त्री** अलीगढ़

मुगलकाल में मिथिला से मैथिल ब्राह्मणों का आना-जाना, जो समाप्त सा हो गया था और अपने पूर्वजों की जन्म भूमि मिथिला से जो दूर होते जा रहे थे, परम पूज्य स्वामी जी के प्रयास से ही मिथिला से हमारा पुनः सम्पर्क बन सका, फलतः हमारे विवाह सम्बन्ध आदि पुनः जुड़ गए। मिथिला से पंजीकारो का आना जाना प्रारम्भ हुआ। बृजस्थ मैथिल ब्राह्मणो ने पंजी मे अपनी उत्तीड़े (वंश विवरण) चढ़वाई। मिथिला से प्रति वर्ष पंजीकार एवं विद्वान ब्रज क्षेत्र के जिलों मे आते रहे, पं० बवूए मिश्र व पं० जगदीश झा प्रमुख थे। यदि हम पूज्य स्वामी जी के अधूरे रहे कार्यों को पुनः प्रारम्भ कर पूर्ण करेंगे, तभी पूज्य स्वामी जी को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

परम श्रद्धेय श्री स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिला के अतरौली तहसील के ग्राम मौसिमपुर में २६ अप्रैल १८५३ ई० में हुआ। इनके पिता का नाम पं० हुलासीराम था। स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती सरिसव मूल के शांडिल्य गोत्रीय मैथिल ब्राह्मण थे। इनका पूर्व का नाम रणधीर था। इनको वेद-उपनिषद आदि के साथ हिन्दी, संस्कृत आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान था तथा इनके सभी संस्कार समयानुसार हुए। कुछ समय इन्होने ग्रहस्थ जीवन का पालन किया, उसके बाद उन्होने सन्यास ग्रहण किया, तदोपरान्त वह स्वामी ब्रह्मनन्द के नाम से विख्यात हुए।

अयोध्या, काषी की पैदल यात्रा करते हुए मिथिलांचल पहुंच कर १०-११ वर्ष प्रवास लिया। वहाँ इन्होंने मैथिल पंजी ज्ञान का पूर्ण अध्ययन एवं संकलन कर अलीगढ़ वापिस आऐ, अलीगढ़ में स्वामी जी ने अथक प्रयासों से ''मैथिल ब्राह्मण सिद्धान्त सभा और ''मैथिल ब्राह्मण संस्कृत पाठशाला'' की रामघाट रोड पर सन् १८८६ ई० में स्थापना की, यही संस्कृत पाठशाला वर्तमान में श्रीमद् ब्रह्मानन्द इण्टर कालिज के नाम से विद्यमान है। इन्होने समाजोत्थान के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया और समाज की सेवा करते हुये स्वामी जी २२ फरवरी सन् १८९५ ई. में ब्रह्ममलीन हो गऐ। पूज्य स्वामी जी जीवन पर्यन्त मैथिल ब्राह्मण समाज के उत्थान में लगे रहे। उन्होंने अपना सर्वस्व समाज को समर्पित कर देश के विभिन्न भागों में प्रवास कर जाति के उत्थान हेतु बिगुल बजाया।

– **डोरीलाल शर्मा 'श्रोत्रीय' अलीगढ**

***

कलियुग में भगवान का नाम ही एकमात्र साधन है और सब साधन कठिन होने के साथ-साथ स्वल्प फल देने वाले हैं। भगवन्नाम को छोड़कर दूसरे साधनों में समय बिताने से कुछ भी हाथ नहीं लगेगा, किन्तु यदि भगन्नाम का आश्रय पकड़े रहोगे तो और सब साधन भी कई गुने अधिक फलदायक हो जायेंगे। कहा भी है-

**राम नाम को अंक है, सब साधन है सून।**
**अंक गए कछु हाथ नहीं, अंक रहे दस गून।।**

# मिथिला के ब्राह्मणों का बृज में आने का ऐतिहासिक दस्तावेज– विद्यापति डायरी

MAITHIL BRAHMIN YouTube

पं.राहुल मिश्र
ज्वालापुरी, अलीगढ़।
मो: 9259647216

युग युगसँ मिथिला निवासी अपन विद्वताक कारणें भारत वर्ष मे पूज्य रहलाह अछि। भारतीय संस्कृतिक प्राचीनतम केन्द्र दिल्ली, आगरा, मथुरा, काशी, प्रयाग इत्यादि स्थानमे सहस्त्रो वर्षसँ एहि ठमक विद्वानक प्रतिष्ठा एवं सम्मान बनल रहल। तेरहम शताब्दी मे अल्लाउद्दीनक शासनकालसँ शाहजहाँक शासनकाल तक ब्रजक विभिन्न स्थान अलीगढ़, हाथरस, रायपुर, मथुरा, आगरा, जयपुर आदि स्थान में मैथिल विद्वान यश-प्रतिष्ठा प्राप्त कय ओहीठाम बसि प्रवास जीवन प्रारम्भ कयल। संवत १३८८ वि.क लगभग मिथिला पर गयासुद्दीन तुगलक आक्रमणसँ भयभित भय मिथिलाक लगभग उप विद्वान तीर्थ यात्राक बहाने ब्रज जाय ओहीठाम बसि गेलह, जिनक सन्तान आई ब्रजक विभिन्न स्थानमे ब्रजस्थ मैथिलक रूप में विद्यमान रहि अपनाकें मैथिल बुझबामे गर्व अनुभव कय रहलाह अछि।

**उपरोक्त लेख मैथिली भाषा में लिखा हुआ है, शायद कुछ मैथिल ब्राह्मण बन्धुओं को यह लेख पढ़ने में कठिनाई महसूस हो, तो इसके लिए आप हमारे You-Tube Channel - MAITHIL BRAHMIN पर मैथिली और हिन्दी भाषा (संयुक्त) की वीडियो देख सकते हैं। जिसमें पहले मैथिली भाषा का उच्चारण किया गया है फिर बाद में हिन्दी का उच्चारण। लेख को समझने हेतु पैराग्राफवाइज ही मैथिली भाषा का हिन्दी में रूपान्तरण किया गया है।**

अकबरक शासनकालमे मिथिलासँ को विद्वान दिल्लीक दरबारमे आश्रय पयलन्हि। एकर प्रमुख कारण प्रथम तँई जे अकबर हिन्दू धर्मक गुणग्राही छलाह। दीसर ओहि समय में ओइनवार वंशक शासनकान समाप्त भेला पर मिथिलाक स्थिति अराजकताक कारणें विषम छल। दिल्ली दरवारक प्रमुख मैथिल छलाह सुखपाणि झा, डुमरी गाँव निवासी पं० जीवनाथ मिश्र, बेनीपट्टी बेहटा निवासी शिवराम झा, फुलवरिया ग्राम निवासी श्रीकान्त मिश्र, गृहपाणि झा, दुर्गादत्त झा, वाचस्पति झा, पंडित पुरुषोत्तम झा, पं०मधुसूदन मिश्र, नारायण, आदित्य, रामभद्र, यदुरूप, बलभद्र मिश्र, वासुदेव मित्र, गौरीनाथ, गोपीनाथ, भीमनाथ, कवि भागीरथ आदि। अकबरक शासनकालमे उपरोक्त मैथिल विद्वानक सहयोग द्वारा संस्कृतक अनेको ग्रन्थक अनुवाद फारसी एवं अरवीमे भेल। अबुल फजलक आइने अकबरीक अनुसारें अकबरक दरबारमे विभिन्न धर्म एवं शास्त्रक ज्ञाता विद्वानक संख्या १४० छल जाहिमे विशेष मैथिले विद्वानक संख्या छल। अकबरेक शासनकालमे अपन शिष्य पं० रघुनन्दन झा क द्वारा १५५६ ई. में म० म० महेश्वर ठाकुर दिल्ली दरबारसं मिथिलाक राज्य प्राप्त कयल।

जहाँगीर यदयपि अपन पिताक सदृश योग्य एवं कर्मठ नहि तथापि हुनको शासनकाल

मे मैथिल विद्वानक आगमन दिल्ली दरवार रहल जाहिमे प्रमुख छथि- पं० फत्तन मिश्र, विद्याधर मिश्र, श्याम झा आदिक नाम प्रमुख अछि। एहि समयमे मिथिलाक राजा पुरुषोत्तम ठाकुरक विधवा रानी अपन पतिक हत्यारा बिहारक सूबेदारक बदखिलाफ शिकायत पेश करक हेतु दिल्ली दरवारमे उचित सम्मानक संग पेश भेल छल ह।

शाहजहाँक शासनकालमे दाराक संरक्षणमे मैथिल विद्वानक सहयोगसँ श्रीमद्भागवत गीता, उपनिषद्, योगवाशिष्ट आदिक अनुवाद फारसी एवं अरबीमे भेल-ओहि मैथिल विद्वानमे प्रमुख छलाह-पं० वंशीधर मिश्र, रघुदेव मित्र तथा पं० विश्वेश्वर मिश्र।

धर्मान्ध औरंगजेब तीन पीढ़ीसँ चल अवेत दिल्ली दरबारमे मैथिल विद्वानक सम्मानक स्वस्थ परम्पराकँ इस्लामी जोशमे तोड़ि देल, तत्पश्चात् मैथिल विद्वान लोकनि देशक विभिन्न हिन्दू राजाक आश्रय लेल जाहिमे प्रमुख छथि-गढ़बालक नरेश महाराजा फतेसिंह, बुन्देलखण्डक महाराज-छत्रसाल एवं बिकानेरक नरेश-कर्ण सिंह। एहि राज दरवारमे आश्रय लेनिहार मैथिल विद्वानमे मुख्य छथि-पं० सुखदेव मिश्र, उमापति उपाध्याय (मंगरौनी), गोकुलनाथ उपाध्याय, गंगानन्द एवं पं. लोचन झा।

अठारहम शताब्दीमे पूनाक राजदरबारमे मैथिल विद्वान पं० सचल मिश्र सम्मान पौने छलाह, जिनक वंशज एखनहुँ जबलपुरमे किछु सम्पतिक अधिकारी छथि।

मल्लानक शासक के शवदेवक दरवारमें मैथिल विद्वान पं० वैद्यनाथ ''केशव-चरित्र'' क रचना कय सम्मानित भेल छला। पंजाब केशरी रणजीत सिंहक दरबारमे चकौती ग्राम निवासी श्रीनाथ झा दानाध्यक्षक पद पर नियुक्त भय मैथिलकँ गौरवान्वित कयल।

उन्नीसवीं शताब्दीक पूर्वाद्धमे हाथरसक राजा दयारामक दरवारमे मैथिल विद्वान माणिक ठाकर विशिष्ट स्थानपर रहि अनेको ग्रन्थक रचना कयल। हुनक वंशज एखनहु प्रवासी मैथिलक रूपमे विद्यमान छथि।

उन्नीसवीं शताब्दीक उत्तरार्द्धमे ब्रह्मानन्द सरस्वती (प्र०मैथिल) मिथिलासँ सम्पर्क कय १८८२ ई० में अलीगढ़ मे श्री मैथिल सिद्धान्त सभाक स्थापना कय मिथिलासँ पंजिकारके बजाय प्रवासी मैथिलक पंजी व्यवस्था कयल; ओहि कममे पंजिकार वबुए मिश्र (जरैल) जगदीश झा (दरभंगा) ब्रज गेल छलाह। पुनः १८८८ ई० ब्रह्मानन्द सरस्वती द्वारा मैथिल ब्राह्मण पाठशाला क स्थापना अलीगढ़मे भेल जाहिमे संस्कृत, ज्योतिष, कर्मकांडक पठन पाठनक व्यवस्था कय मिथिलाक अनेकों विद्वानके प्राध्यापक रूपमे नियुक्त कयल गेल जाहिमे मुख्य छलाह-कहरा निवासी गेन्दालाल झाः पं० लक्ष्मीनाथ मिश्र, पं० खेदन मिश्र, जयगोपाल मिश्र एवं पं० ईश्वरदत मिश्र।

बीसवीं शताब्दी में सरह गोविन्द मिश्र (प्रवासी मैथिल) क प्रयाससँ समय-समय पर मिथिलाक अनेको व्यक्तिक आगमन ब्रजमे भेल जाहिमे मुख्य छथि-महाराज कामेश्वर सिंह, पण्डित बलदेव मिश्र, रायबहादुर शिवशंकर झा, पं० शशिनाथ झा, कविवर सीताराम झा आदि।

उपरोक्त ब्रजस्थ मैथिलक संक्षिप्त इतिहाससँ स्पष्ट अछि जे ब्रजस्थ मैथिल मिथिलाक आदिवासी थिकाह। देश-कालक ही का णें हुनका लोकनिक रहन-सहन, भेष-भाषा आ भाषामे भले ही किछु अन्तर भेल हो किन्तु मूल गोत्र आ अपन मातृभूमिक गौरवक भावनाकँ ओ लोकनि युग युगसँ सुरक्षित रखैत अयलाह अछि। आई आवश्यकता एहि बातक अछि जे ब्रजस्थ मैथिल एवं मिथिलाक मैथिलक बीच सांस्कृतिक एवं वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करबाक प्रयास कय हम दोसरक निकटतम बन्धुत्व स्थापित करी।

******

# श्रीरामशलाका प्रश्नावली

प्रस्तुतकर्ता- रामाश्रय मिश्र- अयोध्या

मानसानुरागी महानुभावों को श्रीरामशलाका प्रश्नावली का विशेष परिचय देने की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती, उसकी महत्ता एवं उपयोगिता से प्रायः सभी मानसप्रेमी परिचित होंगे। अतः नीचे उसका स्वरूपमात्र अंकित करके उससे प्रश्नोत्तर निकालने की विधि तथा उसके उत्तर-फलों का उल्लेख कर दिया जाता है। श्रीरामशलाका प्रश्नावली का स्वरूप इस प्रकार हैः-

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सु | प्र | उ | बि | हो | मु | ग | ब | सु | नु | वि | घ | धि | इ | द |
| र | रु | फ | सि | सि | रें | बस | है | मं | ल | न | ल | य | न | अं |
| सुज | सी | ग | सु | कु | म | स | ग | त | न | ई | ल | धा | बे | नो |
| त्य | र | न | कु | जो | म | रि | र | र | अ | की | हो | सं | रा | य |
| पु | सु | थ | सी | जे | इ | ग | म | सं | क | रे | हो | स | स | नि |
| त | र | त | र | स | इ | ह | ब | ब | प | चि | स | य | स | तु |
| म | का | ा | र | र | मा | मि | मी | म्हा | ा | जा | हू | हीं | ा | जू |
| ता | रा | रे | री | ह | को | फ | खा | जि | ई | र | रा | पू | द | ल |
| नि | को | मि | गो | न | म | ज | य | ने | मनि | क | ज | प | स | ल |
| हि | रा | म | स | रि | ग | द | न | ष | म | रिव | जि | मनि | त | ज |
| सिं | मु | न | न | कौ | मि | ज | र | गू | धू | स्व | सु | का | स | र |
| गु | क | म | अ | ध | नि | म | ल | ा | न | बू | ती | न | रि | भू |
| ना | पु | ब | अ | ढा | र | ल | का | ए | त | र | न | नु | ब | थ |
| सि | ह | सु | म्हा | स | र | स | हि | र | त | न | ष | ा | जा | ा |
| र | सा | ा | ला | धी | ा | री | ज | ह | हीं | षा | जू | ई | रा | रे |

इस रामशलाका प्रश्नावली के द्वारा जिस किसी को जब कभी अपने अभीष्ट प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने की इच्छा हो तो सर्वप्रथम उस व्यक्ति को भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान करना चाहिए। तदनन्तर श्रद्धा-विश्वासपूर्वक मन से अभीष्ट प्रश्न का चिन्तन करते हुए प्रश्नावली के मनचाहे कोष्ठक में जो अक्षर हो, उसे अलग किसी कोरे कागज या स्लेट पर लिख लेना चाहिये। प्रश्नावली के कोष्ठक पर भी ऐसा कोई निशान लगा देना चाहिये जिससे न तो प्रश्नावली गंदी हो और न प्रश्नोत्तर प्राप्त होने तक वह कोष्ठक भूल जाय। अब जिस कोष्ठक का अक्षर लिख लिया गया है उससे आगे बढ़ना चाहिये तथा उसके नवें कोष्ठक में जो अक्षर पड़े, उसे भी लिख लेना चाहिये।

इस प्रकार प्रति नवें अक्षर के नवें अक्षर को क्रम से लिखते जाना चाहिये और तब तक लिखते जाना चाहिये, जब तक उसी पहले कोष्ठक के अक्षर तक अँगुली अथवा शलाका न पहुँच जाय। पहले कोष्ठक का अक्षर जिस कोष्ठक के अक्षर से नवाँ पड़ेगा, वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते एक चौपाई पूरी हो जायेगी, जो प्रश्नकर्ता के अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगा। यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि किसी-किसी कोष्ठक में केवल 'आ' की मात्रा (ा) और किसी किसी कोष्ठक में दो-दो अक्षर हैं। अतः गिनते समय न तो मात्रा वाले कोष्ठक को छोड़ देना चाहिये और न दो अक्षरों वाले कोष्ठक को दो बार

गिनना चाहिये। जहाँ मात्रा का कोष्ठक आवे वहाँ पूर्वलिखित अक्षर के आगे मात्रा लिख लेना चाहिये और जहाँ दो अक्षरों वाला कोष्ठक आवे, वहाँ दोनों अक्षर एक साथ लिख लेना चाहिये।

अब उदाहरण के तौर पर इस रामशलाका प्रश्नावली से किसी प्रश्न के उत्तर में एक चौपाई निकाल दी जाती है। पाठक ध्यान से देखें। किसी ने भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान और अपने प्रश्न का चिन्तन करते हुए यदि प्रश्नावली के इस चिन्ह से संयुक्त 'म' वाले कोष्ठक में अंगुली या शलाका रखा और वह ऊपर बताये क्रम के अनुसार अक्षरों को गिन-गिनकर लिखता गया तो उत्तर स्वरूप यह चौपाई बन जायेगी-

***हो इ है सो ई जो रा म र चि रा खा। को क रि त र क ब ढ़ा व हिं सा षा।।***

यह चौपाई बालकाण्डान्तर्गत शिव और पार्वती के संवाद में है। प्रश्नकर्ता को इस उत्तरस्वरूप चौपाई से यह आशय निकालना चाहिये कि कार्य होने में सन्देह है, अतः उसे भगवान पर छोड़ देना श्रेयस्कर है।

इस चौपाई बालकाण्डान्तर्गत शिव और पार्वती के संवाद में है। प्रश्नकर्ता को इस उत्तरस्वरूप चौपाई से यह आशय निकालना चाहिये कि कार्य होने में सन्देह है, अतः उसे भगवान् पर छोड़ देना श्रेयस्कर है।

इस चौपाई के अतिरिक्त श्रीरामशलाका प्रश्नावली से आठ चौपाइयाँ और बनती हैं, उन सब के स्थान और फल का उल्लेख नीचे किया जाता है। कुल नौ चौपाइयाँ हैं-

१- *सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी।।*
**स्थान**- यह चौपाई बालकाण्ड में श्रीसीता जी के गौरीपूजन के प्रसंग में है। गौरीजी ने श्रीसीता जी को आशीर्वाद दिया है।
**फल**- प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा।

२- *प्रबिसि नगर कीजै सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा।।*
**स्थान**- यह चौपाई सुन्दरकाण्ड में हनुमान जी् के लंका में प्रवेश करने के समय की है।
**फल**- भगवान् का स्मरण करके कार्यारम्भ करो, सफलता मिलेगी।

३- *उघरें अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू।।*
**स्थान**- यह चौपाई बालकाण्ड के आरम्भ में सत्संग-वर्णन के प्रसंग में है।
**फल**- इस कार्य में भलाई नहीं है। कार्य की सफलता में सन्देह है।

४- *बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं।।*
**स्थान**- यह चौपाई भी बालकाण्ड के आरम्भ में ही सत्संग-वर्णन के प्रसंग की है।
**फल**- खोटे मनुष्यों का संग छोड़ दो। कार्य पूर्ण होने में संदेह है।

५- *मुद मंगलमय संत समाज। जिमि जग जंगम तीरथ राजू।।*
**स्थान**- यह चौपाई बालकाण्ड में संत-समाज रूपी तीर्थ के वर्णन में है।
**फल**- प्रश्न उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

६- *गरल सुधा रिपु करय मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।।*
**स्थान**- यह चौपाई श्री हनुमान्जी के लंका में प्रवेश करने के समय की है।
**फल**- प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है, कार्य सफल होगा।

७- *बरून कुबेर सुरेस समीरा। रन सनमुख धरि काह न धीरा।।*
**स्थान**- यह चौपाई लंकाकाण्ड में रावण की मृत्यु के बाद मन्दोदरी के विलाप के प्रसंग में है।
**फल**- कार्य पूर्ण होने में सन्देह है।

८- *सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। राम लखनु सुनि भए सुखारे।।*
**स्थान**- यह चौपाई बालकाण्ड में पुष्पवाटिका से पुष्प लाने पर विश्वामित्रजी का आशीर्वाद है।
**फल**- प्रश्न बहुत उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

इस प्रकार रामशलाका प्रश्नावली से कुल नौ चौपाइयाँ बनती हैं, जिनमें सभी प्रकार के प्रश्नों के उत्तराशय सन्निहित है।

***

# स्वास्तिक का प्रयोग मंगलकारी एवं दुर्पोयोग अमंगलकारी

– पं० रामनारायन मिश्र– कानपुर

स्वास्तिक एक ऐसा प्रतीक या चिन्ह है, जिसे हिन्दुओं के यहां मांगलिक माना जाता है। इसका आकार इस प्रकार है– स्वास्तिक शब्द की व्युत्पत्ति स्वस्ति से हुई है, जिसका अर्थ है– क्षेम या कल्याण। यही कारण है कि हिन्दुओं के यहां मांगलिक कृत्यों के प्रारम्भ में मन्त्रोच्चारण के साथ जो पवित्र तण्डुल-विकिरण किये जाते हैं, उसे स्वस्तिपुण्याहवाचन कहते हैं। इसी प्रकार अन्य मांगलिक कार्यों में भी सबसे प्रथम स्वास्तिक ही अंकित किया जाता है। प्रायः किसी मांगलिक कार्य के समय गणेशपूजन करने से पहले यह चिन्ह बनाया जाता है।

## ----------: स्वास्तिक का दुर्पोयोग :----------

यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि भारतीयों के यहां स्वास्तिक का प्रयोग मांगलिक कार्यों में किया जाता है। इसके साथ-साथ वे इसे कभी भी ऐसे स्थान पर अंकित नहीं करते, जहां पांव रखे जाते हो अथवा जो स्थान पवित्र न हो। इसी प्रकार वे इस पावन चिन्ह को अपने बांये हाथ या बाजू पर भी धारण नहीं करते। ऐसा करना उनके यहां निषेध माना गया है, क्योंकि यह अमंगल या अशुभ का सूचक है। एडोल्फ हिटलर (१८८९-१९४५ई०) जब जर्मनी का डिक्टेटर बना तो उसने स्वास्तिक के चिन्ह का दुर्पोयोग किया यानि उसे अपने बांये बाजू पर धारण किया। कहते हैं कि हिटलर ने सैनिकों के जूतों पर भी स्वास्तिक अंकित करवाया था– यह उसी का दुष्परिणाम था कि उसका और उसकी पार्टी का सर्वनाश हुआ।

जो लोग यह समझते हैं कि स्वास्तिक के चिन्ह के कारण हिटलर का नाश हुआ, वे भ्रम में हैं। हिटलकर का नाश स्वास्तिक के दुर्पोयोग के फलस्वरूप हुआ। उसने स्वास्तिक को बिना सोचे-समझे अपने बांये बाजू पर धारण किया, जबकि उसे इस पावन चिन्ह को अपने दांये बाजू पर धारण करना चाहिए था। यह चिन्ह भारत से उसके देश में पहुंचा था। उसे यह खबर नहीं थी कि स्वास्तिक जितना मंगल या सौभाग्य का सूचक है, उसका दुर्पोयोग उतना ही अमंगलदायक या दुर्भाग्यदाता भी है। स्वास्तिक को अपने बांये बाजू और सैनिकों के जूतों पर अंकित कर हिटलकर ने अपने नाश का स्वयं ही आवाहन किया।

स्वास्तिक को अपने ध्वज पर अंकित करने से उन्हें अपूर्व शक्ति मिली। लेकिन उन्होंने उस शक्ति का दुर्पोयोग किया। दैत्यों और देवों के युद्धों में भी यही सब कुछ हुआ। देव भी शंकर की उपासना करते थे और दैत्य भी शिव के भक्त थे। लेकिन देवों और दैत्यों के चिन्तन में जमीन और आसमान का अन्तर था। दैत्य हिंसा में विश्वास रखते थे, जबकि देवों का विश्वास अहिंसा में था। शक्ति का यदि कोई दुर्पोयोग करता है तो इसमें शक्ति का क्या दोष है। इसलिए न केवल यूरोप बल्कि तमाम दुनियां में रह रहे वैदिकधर्मों भारतीयों को स्वास्तिक अपने घरों के बाहर अंकित करवाना चाहिए ताकि दुनियां के लोगों को यह मालूम हो कि 'स्वास्तिक' भारत वैदिकधर्मी की पहचान है।

**-वेदचक्षु से साभार**

# ।। शब्द संभाल कर बोलिये ।।

श्रीमती सत्या मिश्रा
अम्बाबाड़ी, जयपुर

एक शब्द औषध करे- एक शब्द घायल करे।
मुख से निकला शब्द वापिस फिर नहीं आयेगा।
दिल किसी का तोड़ के - तू भी चैन नहीं पायेगा।
शब्द पर ध्यान रखना- मन से अमृत घोलिये।
शब्द ही मीठा महान है, शब्द के न हाथ न पैर
शब्द ही मीठा है गुरू की अमृत वाणी जैसा है।
मौन शब्द ही मीठा और महान है।
इसलिये जो शब्द बोलने से पहले सोचता है।
वह महान है ईश्वर ही महान हैं। उसे प्यार करना।

# ।। ओस की एक बूँद है बेटियाँ ।।

ओस की एक बूँद होती है बेटियाँ।
स्पर्श खुरदरा हो तो रोती है बेटियाँ।।
रोशन करेगा बेटा- तो एक ही कुल को।
दो कुल का ताज होती है बेटियाँ।।
कोई नहीं है दोस्तो एक दूसरे से कम।
हीरा अगर है बेटा, तो मोती हैं बेटियाँ।।
काँटों की राह पर वे ये खुद ही चलती रहेगी।
औरों के लिये फूल बोती हैं बेटियाँ।
विधि का विधान है यही समाज की परम्परा।
अपने प्रियों को छोड़ पिया के घर जाती हैं बेटियाँ।
बेटी धन पराया होती है यह मैं सुनती आयी हूँ।
दर्द विदाई का क्या आज समझ में आया।।
गम और खुशी का रिस्ता कैसा है- अजीब है भाई।
मेरी परछाई मुझसे ले रही है विदाई।।
यही जग की परम्परा है।

***

MAITHIL BRAHMIN YouTube

Whatsapp: 9259647216
Phone Pay/Paytm A/c: 9259647216

यू-टूब चैनल पर आप अवश्य देखें कि सगोत्र अर्थात् एक ही गोत्र में मैथिल ब्राह्मणों को विवाह क्यों नहीं करना चाहिए ?

# सुख-शान्ति हेतु यह करके देखें

**आचार्य कृष्णानन्दाचार्य**
मथुरा

**दुकान को नजरदोष से बचाने हेतु प्रयोग-**

दीपावली के दिन एक नींबू तथा सात हरी मिर्चें स्वच्छ सूती धागे में पिरोकर दुकान या संस्थान की चौखट के बीच में लटकाएं। ऐसा प्रत्येक शनिवार एवं अमावस्या को करें। इससे व्यापार/व्यवसाय को नजर नहीं लगती तथा आय में निरन्तर वृद्धि होती रहती है।

**धन के अपव्यय निवारण हेतु प्रयोग-**

घर में सूर्योदय से पूर्व झाड़ू निकालने एवं सांयकाल से पूर्व झाड़ू निकालने से उस घर से धन का अपव्यय नहीं होता है और धन-सम्पदा बनी रहती है।

**दरिद्रता निवारक एवं समृद्धिदायक प्रयोग-**

घर की छत पर खाली मटके, कबाड़ का सामना, लोहा, पत्थर इत्यादि रखने से घर में दरिद्रता आती है। अतः घर की छत पर रखे, उक्त सामान को हटाने से धन एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

**व्यक्तिगत आय में वृद्धि हेतु प्रयोग-**

धनत्रयोदशी से आरम्भ होकर भाईदूज तक होने वाली दीपावली की पूजा में रखे श्रीयंत्र+चौतीसा यंत्र के संयुक्त लॉकेट को गले में धारण करने से धारक की व्यक्तिगत आय में जबरदस्त वृद्धि होती है।

**धन-समृद्धि हेतु प्रयोग-**

धन त्रयोदशी से आरम्भ करते हुए प्रत्येक गुरूवार को तुलसी के पौधे में प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर दूध और जल चढ़ाने से धन-समृद्धि में वृद्धि होती है।

**भगवान गणेश की कृपा प्राप्ति हेतु प्रयोग-**

ब्रह्मा मुहूर्त में घर के बाहर मुख्य द्वार के ठीक दाहिने कच्चा दूध, जल और जौ प्रत्येक गुरूवार को श्रद्धापूर्वक डालने से उस घर में लक्ष्मी एवं गणेश की कृपा बनी रहती है।

**सुख-समृद्धि हेतु प्रयोग-**

दीपावली से आरम्भ करते हुये प्रत्येक अमावस्या को सांयकाल किसी अशक्त भिखारी अथवा असहाय विकलांग व्यक्ति को भोजन कराएं तो इस पुण्य से निश्चय ही सुख और समृद्धि प्राप्त होती है।

**शीघ्र भाग्य चमकाने हेतु प्रयोग-**

अगर आप दीपावली के दिन पीला त्रिकोण आकृति की पताका विष्णु मंदिर में उंचाई वाले स्थान इस प्रकार लगाएं कि वह लहराता हुआ रहे तो आपका भाग्य शीघ्र ही चमक उठेगा। झंडा लगातार वहां लगा रहना चाहिए। यह अनिवार्य शर्त है।

**दुकान की बिक्री बढ़ाने हेतु प्रयोग-**

यदि दुकान की बिक्री कम हो गई हो तो शनिवार की संध्या को हाथ में एक सुपारी एवं तांबे का सिक्का ले जाकर पीपल के पेड़े के नीचे रख आएं। रविवार को उस पेड़ का एक पत्ता लाकर गद्दी के नीचे रखें तो सदैव ग्राहक अनुकूल बने रहते हैं।

**धनहानि से मुक्ति हेतु प्रयोग-**

दीपावली की रात्रि में काले तिल परिवार के सभी सदस्यों के सिर पर सात बार उतार कर घर की उत्तर दिशा में फेंक दें, धनहानि बंद होगी।

******

# क्यों करते हैं परिक्रमा ?

– पं० रमेश चन्द्र मिश्रा
नरौरा बुलन्दशहर

गतिशीलता की परिचायक ''परिक्रमा'' (प्रदक्षिणा) का हमारे सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में अत्यधिक महत्व है। पूजा-अर्चना एवं अनुष्ठान आदि में परिक्रमा की परम्परा है, जिसका निर्वाह दैनिक जीवन में किया जाता है। अपने धार्मिक, सांस्कृतिक जीवन में प्रायः प्रातःकाल अधिकांश श्रद्धालु स्नान करने के पश्चात् देवालय अवश्य जाते हैं। वहाँ अपने इष्टदेव (देवी-देवता) की पूजा-अर्चना के पश्चात् देवालय की परिक्रमा भी अवश्य की जाती है। जब तक परिक्रमा या प्रदक्षिणा न कर लें, तब तक मन को शांति नहीं मिलती।

सर्वांगीण सुखद एवं सुसंस्कृत जीवन व्यतीत करने के लिए हमारी संस्कृति में जो प्रावधान किए गए हैं, वे प्रत्येक दृष्टि से सारगर्भित एवं रहस्यपूर्ण है। सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी एवं सभी ग्रह जब गतिशील है, तब इस गतिशीलता को संतुलित रखने वाले परमपिता परमेश्वर के समक्ष पहुंचकर भक्त भी क्यों न अपनी गतिशीलता को व्यक्त करें, अर्थात् सबके साथ हम भी हैं। इस कृत्य से समन्वयात्मक भावना सुदृढ़ होती है। प्रभु के सम्मुख सभी श्रद्धालु एक समान हैं। अतः सब एक साथ मिलकर जब देवालय की परिक्रमा करते हैं तो एक अदभुत उर्जा सभी को गतिशीलता प्रदान करती है।

जब विशाल यज्ञ आयोजित किए जाते हैं, यज्ञ की आहुतियों एवं मंत्रोच्चारण से जब पूरा क्षेत्र भक्तिभाव से ओत-प्रोत हो जाता है तब प्रायः देखने में आता है कि हजारों की संख्या में नर-नारी, बच्चे-वृद्ध यज्ञशाला की परिक्रमा तेज गति से घंटों तक चलते हुए करते हैं। यज्ञशाला की परिधि के अनुरूप कोई १५१ बार, कोई १०५१ बार, कोई ११०० बार अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार व्रत-उपवास के साथ परिक्रमा करते हुए, भजन-मंचोच्चार आदि करते हुए, करतलध्वनि के साथ भावविभोर हो प्रभु के प्रति समर्पित हो जाते हैं।

सामान्य दृष्टि से भी यदि देखें तो आभास होता है कि कुछ ऐसे लोग भी हाते हैं, जो समयाभाव अथवा शारीरिक असमर्थता के कारण चल-फिर नहीं सकते। इस परिप्रेक्ष्य में उनके लिए भी यह अति लाभकारी सिद्ध होता है, वे प्रातःकाल पूजा-अर्चना में जब भी जाते हैं तो भगवान के दर्शन के साथ परिक्रमा का भी लाभ लेते हैं, जो उनके स्वास्थ्य के लिए हितकारी होता है। वैज्ञानिक (आधुनिक) दृष्टि से भी नंगे पैर परिक्रमा करना लाभदायक माना जाता है।

अपने-अपने इष्टदेव के समक्ष परिक्रमा-प्रदक्षिणा करते हुए सांसारिक गतिशीलता की अनुभूति अत्यधिक गरिमापूर्ण है कि जब स्थायित्व संसार में कहीं नहीं है जब मनुष्य अपने अल्पतम जीवन में सदाचार-दुराचार को समझने का प्रयास करें, यही उसके जीवन की सफलता, सार्थकता और सांसारिकता है।

हमारे धार्मिक विधि-विधानों में जो दूरदर्शिता दिखाई गई है। वह वास्तव में स्तुत्य है। इस परिप्रेक्ष्य में 'पंचकोशी' पदयात्रा की परम्परा भी देश के अनेक भागों में लोकप्रिय है। गोवर्धन, वृन्दावन आदि पावन नगरों में देखा जाता है कि हजारों की संख्या में स्त्री-पुरूष कुछ निश्चित अवधि में पांच कोस की पैदल यात्रा करते हैं। व्रत-उपवास, फलाहार-स्वल्पाहार, निराहार-मिताहार आदि प्रकार से गीत, भजन, कीर्तन गाते-बजाते ये श्रद्धालु भक्तजन दुर्गम मार्ग को भी सुगमता से पार करते हुए अपने लक्ष्य तक पहुंचते हैं। कितना अटूट विश्वास, कितनी अचल आस्था, कितनी भक्ति भावना इनमें समाई रहती है कि विषम परिस्थितियों में भी ये डिगते नहीं, अपितु लक्ष्य तक अवश्य ही पहुंचते हैं।

तपःप्रधान भारतीय संस्कृति की अद्वितीय महत्ता है कि इस संबल से मनुष्य असंभव कार्य को भी संभव कर सकने में सफल हो जाता है, जिसके अनेक उदाहरण हमारे ऐतिहासिक आलोक में देखे जा सकते हैं। इसी क्रम में 'पदयात्रा' की भी अपनी महत्ता है। कठोर तप करने वाले जैन साधु-साध्वियां हजारों मील की पैदल यात्रा नंगे पैर से चलकर ही पूरी करती है। इस दुर्गम पदयात्रा में असहनीय कष्ट भी होते हैं, किन्तु कष्टों को सहन करते हुए भी ये सदाचार की शिक्षा सर्वत्र जाकर देते हैं। देश में समन्वयात्मक भावना जाग्रत करने के लिए, सबके दुःख-सुख को देखने-समझने के लिए, सबके कल्याण की कामना के लिए पदयात्रा करना स्तुत्य कार्य है।

***

# मसूड़ों की बीमारी से मस्तिष्काघात का खतरा

- डा० अनिल कुमार शर्मा,
बी.ए.एम.एस. अलीगढ

मसूड़ो की बीमारी से जूझ रहे वयस्कों में मस्तिष्काघात होने का खतरा ज्यादा होता है। एक हालिया शोध में यह खुलासा हुआ है। शोधकर्ताओं ने पाया कि मसूड़ों की बीमारी से पीड़ित लोगों के मस्तिष्क में धमनियों के अवरूद्ध होने की संभावना दो गुनी थी। जब मस्तिष्क की धमनियां चिपचिपे पदार्थ से चिपक जाती हैं तो यह रक्त के प्रवाह को सीमित कर देती है और स्ट्रोक का कारण बन सकती है।

माना जाता है कि मसूड़ों की सूजन रक्तप्रवाह को प्रभावित करके धीरे-धीरे रक्त वाहिकाओं को क्षतिग्रस्त कर देता है। रोजाना दांतों की सफाई करना इस बीमारी से बचने का सबसे आसान तरीका है। मसूड़ों की बीमारी जिसे पेरीडोंटल भी कहते हैं, बैक्टीरिया और गंदगी की वजह से होने वाला संक्रमण है। इसका सबसे मुख्य लक्षण मसूड़ों से खून आना है। अगर इसका इलाज नहीं हुआ तो जबड़े को समर्थन देने वाले ऊतकों तक यह बीमारी फैलकर, सारे दांत गिर सकते हैं।

## कई गंभीर खतरों की आशंका

मसूडों की बीमारी को स्वास्थ्य सम्बन्धी कई परेशानियों से जोड़ा गया है। इनमें मधुमेह, हृदयरोग और मस्तिष्काघात का खतरा शामिल है। यह गर्भावस्था के दौरान भी समस्याएं पैदा कर सकती है और डिमोशिया के पनपने का कारण बनती है। शोधकर्ता डॉक्टर सौविक सेन ने कहा, मसूड़ों की बीमारी एक गम्भीर बैक्टीरियल संक्रमण है जो दांतों को सहारा देने वाली नरम और कठोर संरचनाओं को प्रभावित करता है और सूजन से सम्बन्धित होता है। यह एथेरोस्क्लेरोसिस के विकास या रक्त वाहिकाओं के सख्त होने में एक प्रमुख भूमिका निभाती है, हमने जांच की कि क्या मसूड़ों की बीमारी मस्तिष्क में रूकावट से भी जुड़ी हुई है।

**दो अध्ययन किए गए-** इस शोध में दो अलग तरह के अध्ययन किए गए। पहले अध्ययन में शोधकर्ताओं ने ११४५ लोगों पर अध्ययन किया, जिन्हें कभी मस्तिष्काघात नहीं हुआ था। उन्होंने एम.आर.आई. स्कैनिंग की मदद से दिमाग की धमनियों में मौजूद अवरोधों को देखा। इसके अलावा इन लोगों में मसूड़ों की बीमारी की भी जांच की। जिन लोगों को जिंजिवाइटिस था, उनके मस्तिष्क की धमनियों के संकरे होने का खतरा दो गुना ज्यादा था। उम्र, उच्च रक्तचाप और उच्च कोलेस्ट्रोल जैसे कारकों को ध्यान में रखने के बाद भी जिन लोगों में जिंजिवाइटिस की बीमारी थी, उनके दिमाग की धमनियों के अवरूद्ध होने का खतरा २.४ गुना ज्यादा था।

दूसरे शोध में २६५ ऐसे मरीजों को शामिल किया गया, जो मस्तिष्क आघात से पीड़ित थे। इनकी औसत उम्र ६४ वर्ष थी। इस समूह में जिन लोगों को मसूड़ों की बीमारी थी, उनके दिमाग की रक्त वाहिकाओं में आघात का खतरा ३ गुना ज्यादा था। धमनियों के कड़े होने की बीमारी को एथेरोसिलेरोसिस कहते हैं और यह दिमाग के साथ शरीर के किसी भी हिस्से में हो सकता है। जब दिमाग की धमनियां अवरोध होती हैं, तब कोलेस्ट्रोल और गंदगी से बना एक चिपचिपा पदार्थ रक्त के प्रवाह को रोक देता है। शोधकर्ता डॉ सेन ने कहा, जो लोग मसूड़ों की बीमारी से पीड़ित हैं, उनके चिकित्सकों को उनका अधिक ध्यान रखने की जरूरत है। हमारे शोध से पता चलता है कि मसूडों की बीमारी का तुरन्त इलाज किया जाना बेहद जरूरी है। ***

# मेरी श्री श्री 84 कोस बृजमण्डल परिक्रमा यात्रा

**चन्द्रदत्त वैद्य, अलीगढ़**

हमें भगवान श्रीकृष्ण को सही अर्थों में जानना है तो हमें चौरासी कोस परिक्रमा अवश्य करनी चाहिए। श्रीकृष्ण जी के तत्कालीन समय में कंस के अत्याचारों से पीड़ित जनता को मुक्त कराने एवं मथुरा के चारों ओर की क्षेत्रीय जनता, ग्वाल वालों व मातृशक्ति को संगठित करते हुये लगभग दस हजार गांवों में भ्रमण कर कंस से मुकाबला करने हेतु मजबूत संगठन बनाया। संगठन का यह कार्य श्रीकृष्ण ने बृजमण्डल के लगभग ८४ कोस की परिधि में किया था। ८४ कोस के इस क्षेत्र में श्रीकृष्ण ने कहीं ताड़का का वध करके, कहीं धेनुकासुर, मधुदेत्य, वकासुर जैसे राक्षसों का वध किया व इसी क्षेत्र में राजा इन्द्र का अभिमान दूर कर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। कंस द्वारा स्थापित ''दुग्ध संग्रह केन्द्रों'' पर बृजमण्डल का दूध बिक्री हेतु न जाय, इसकी व्यवस्था भी उन्होंने, साम, दाम, दण्ड, भेद नीति से किया। संगठन के इस कार्य को हम श्रीकृष्ण की लीला भी कह सकते हैं।

**संयोजक द्वारा हमें सूचना दी गई कि–** सम्पूर्ण यात्रा में अनुशासन बनाए रखें। संयोजकगणों के प्रत्येक आदेश का पालन करें। एक वाहन में ९ यात्री बैठेंगे। अतः सामंजस्य बनाकर बैठें। यह जिद न करें कि हम आगे ही बैठेंगे या खिड़की के पास ही बैठेंगे। यात्रा में प्रातः ७ बजे से जलपान के बाद हर हाल में निकलना होगा। सांय तक हमें वाहन में रहना है, दोपहर का भोजन व सांय का जलपान वाहन में ही होगा। चाय/भोजन के लिए स्पेशली वाहन नहीं रोका जायेगा। आवास व भोजन की व्यवस्था आपकी अपनी होगी। सभी कुण्डों का जल संग्रह हेतु एक बड़ी बोतल ले जावें। इस संग्रहीत जल का घर लाकर घर में छिड़कदें।

**चौरासी कोस की परिक्रमा की यह यात्रा** राया से प्रातः ७ बजे प्रारम्भ होगी। ८४ कोस में स्थित श्रीकृष्ण का संगठन कार्य (लीला) का दर्शन तो हमें १ माह में पैदल चलकर ही हो सकता है। ८४ कोस की परिधि वर्तमान उत्तर प्रदेश, राजस्थान व हरियाणा प्रान्त से होकर जाती है। इस परिधि को स्पर्श करने वाले लगभग ५० स्थानों में से अति महत्व के लगभग २० स्थानों के दर्शन व पूजन हम अपनी परिक्रमा यात्रा के माध्यम से करेंगे। सम्पूर्ण यात्रा हम वाहनों द्वारा करेंगे।

**८४ कोस के दर्शनीय स्थल–** राया से परिक्रमा प्रारम्भ कर बन्दी, बल्देव, चिन्ताहरण मन्दिर, ब्रहमाण्ड घाट, रमणरेती महावन, गोकुल, रावल, मधुवन, ताडवन, कुमुदवन, शान्तनु कुण्ड, वहुलावन, राधाकुण्ड, गोवर्धन, लठावन (डींग) आदिवद्री, केदारनाथ, चरणपहाडी, काम्यवन, व्योमासुर पर्वत / गुफा, भोजन थाली, फिसलनी शिला, यमुना कुण्ड, विमलकुण्ड, कदमखण्डी, बरसाना, नन्दगांव, खदिरवन, जावट, कोकिलावन, कोटवन, छत्रवन (छाता), खेलवन, विहारवन, भद्रवन, भाण्डीरवन, रूठी राधारानी पश्चात राया।

## दर्शन, पूजन करने वाले स्थल

**१–बल्देवः** मथुरा से दक्षिण-पूर्व में स्थित बल्देव गांव बल्देवजी का विहार स्थल था।

**२–ब्रहमाण्ड घाटः** कन्हैया के मिट्टी खाने के बाद श्रीकृष्ण जी ने अपनी मैया को अपने मुंह में ब्रहमाण्ड का दर्शन कराया था।

**३–रावलः** गोकुल से ५ किमी उत्तर में रावल गांव राधारानी का जन्मस्थान है।

**४–मधुवनः** मथुरा से ७ किमी पश्चिम व दक्षिण दिशा में स्थित मधुवन द्वादश वनों में सर्वश्रेष्ठ व प्रथम वन है। श्रीकृष्ण जी ने सर्वप्रथम मधुवन से ही गोचारण प्रारम्भ किया था। इसी वन में श्रीकृष्ण जी ने मधुदैत्य का वध किया था।

**५–तालवनः** मधुवन से ३ किमी दक्षिण में तालवन है, यहाँ धेनकासुर का वध किया था।

**६–कुमदवनः** तालवन से २ किमी उत्तर-पश्चिम में कुमुदवन है, श्रीकृष्ण का यह प्रिय स्थान है। सखाओं के साथ श्रीकृष्ण जी यहां विविध खेल खेलते थे।

**७–शान्तुन कुण्डः** महाराज शान्तुन ने पुत्र प्राप्ति हेतु यहाँ सूर्य की उपासना की थी।

८-**वहुलावनः** शान्तुन कुण्ड से २० किमी पश्चिम में द्वादश वनों में सर्वश्रेष्ठ पंचम वन बहुलावन है। यहां पर श्रीकृष्ण जी ने वहुला गाय की शेर से सुदर्शन चक्र द्वारा रक्षा की थी।

९-**लठावन (डींग):** राजस्थान सीमा में प्रवेश के बाद सर्वप्रथम लठ्ठावन (भरतपुर राजा का किला), किले में साक्षी गोपाल मन्दिर व कृष्ण कुण्ड दर्शनीय है।

१०-**आदि वद्रीनाथः** लठठावन से २० किमी पूर्व में आदि वद्रीनाथ स्थित है। बृज की जनता को बृज से बाहर किसी तीर्थ में न जाना पड़े, इस हेतु भगवान कृष्ण ने पर्वत की सबसे ऊँची चोटी पर वद्रीनाथ, पर्वतों के मध्य रामेश्वर, हरिद्वार, ऋषिकेश, देव सरोवर, गंगोत्री, यमुनोत्री आदि-आदि तीर्थों को स्थापित किया।

११-**केदारनाथः** वद्रीनाथ २० किमी पश्चिम में पर्वत के शिखर पर श्री केदारनाथ जी व श्री पार्वती देवी स्थापित हैं।

१२-**चरण पहाडीः** कामवन से साढ़े ३ किमी पश्चिम में पहाड़ की चोटी पर श्रीकृष्ण जी के चरण एक शिला पर अंकित पूजनीय एवं दर्शनीय हैं।

१३-**कामवनः** बृज के द्वादश वनों में कामवन चतुर्थ क्रम में सर्वश्रेष्ठ वन हे, वाराह पुराण में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कामवन के इस तीर्थ में जो आएगा वह मेरे धाम को प्राप्त होगा।

१४-**भोमासुर गुफाः** भोमासुर पर्वत पर स्थित गुफा में भोमासुर राक्षस को श्रीकृष्ण जी ने मारकर ग्वाल वालों को मुक्त कराया था।

१५-**भोजन थालीः** गोचारण के समय ग्वाल वाल साथ श्रीकृष्ण जी यहीं भोजन करते थे। खाने के बर्तनों के चिन्ह आज भी इस शिला पर दर्शनीय है।

१६-**फिसलनी शिलाः** गोचारण के समय श्रीकृष्ण सभी सखाओं के साथ एक विशाल चिकनी शिला पर फिसला-फिसली खेल खेलते थे।

१७-**यमुना कुण्ड**

१८-**विमला कुण्डः** काम्य के दक्षिण दिशा में स्थित ८४ कोस परिक्रमा के सभी तीर्थ विमला कुण्ड में विराजमान हैं, विशाल कुण्ड के चारों ओर दर्शनीय मन्दिर हैं। बिना विमला कुण्ड के दर्शन व परिक्रमा के ८४ कोस परिक्रमा पूर्ण नहीं मानी जाती।

१९-**लुकाछिपी कुण्ड**

२०-**बरसाना**

२१-**नन्दगांव**

२२-**खदिर वन-** बृज के द्वादश वनों में सर्वश्रेष्ठ सप्तम वन में गोचारण के समय वकासुर राक्षस का वध यहीं किया था।

२३-**कोकिलावन**

२४-**कोटवनः** श्रीकृष्ण जी के साथ ग्वाल वालों की विशेष मन्त्रणा व खेलकूद इसी स्थान पर होती थी।

२५-**विहार वनः** राधाकृष्ण के विहार का वनव है।

२६-**भद्रवनः**

२७-**भाण्डीरवनः** यमुना नदी के तट पर भाण्डीरवन है। बलराम व श्रीकृष्ण की हत्या के लिए प्रयलम्बासुर राक्षस ने यहाँ षडयन्त्र रचना था, जो व्यक्ति जितेन्द्रीय व संयतहारी होकर भाण्डीर कुण्ड में स्नान करता है उसे पुनः गर्भ यातना सहन नहीं करनी पड़ती।

२८-**रूठी राधारानीः** पानी गांव से २ किमी पूर्व में मानसरोवर कुण्ड, रूठी राधारानी व श्रीकृष्ण जी का विशाल मन्दिर दर्शनीय है।

इसके पश्चात ७ किमी पूर्व में चलकर राया गांव में हमारी परिक्रमा पूर्ण हुयी।

MAITHIL BRAHMIN
YouTube
SUBSCRIBE

# पैसा रखे जहाँ, वहाँ करें ये उपाय

– पं० राघवेन्द्र शास्त्री, फरीदाबाद

सभी के घरों में धन या अन्य कोई मूल्यवान सामान रखने के लिए एक विशेष स्थान होता है। जहाँ पर ये सभी सामान आप रखते हैं, उसके लिए एक चमत्कारी उपाय बताया जा रहा है, जिससे आपके घर में बरकत बनी रहेगी और कभी भी पैसों की कमी नहीं होगी।

इस सम्बन्ध में वास्तु शास्त्र के अनुसार बताई गई टिप्स अपनाने से घर में हमेशा बरकत बनी रहती है और धन की कमी नहीं होती। जहाँ पर धन या मूल्यवान सामान रखते हो, उस स्थान को एकदम पवित्र एवं साफ-स्वच्छ रखना चाहिए। उस स्थान पर महालक्ष्मी की अद्‌भुत और चमत्कारी फोटो लगाएं। फोटो ऐसा हो जिसमें देवी लक्ष्मी बैठी हुई हों, चित्र सुन्दर और परम्परागत होना चाहिए। साथ ही दो हाथी सूंड़ उठाए नजर आते हों।

ऐसा फोटो लगाने पर आपके घर पर महालक्ष्मी की कृपा हमेशा बनी रहेगी और पैसों की कमी कभी नहीं आएगी। इसके साथ ही ध्यान रखें कि खुद को किसी भी प्रकार के अधार्मिक कर्मों से दूर ही रखें। जिस कमरे में तिजोरी रखी गई है, उस कमरे में हल्का क्रीम रंग पेंट करेंगे तो अच्छा रहेगा।

वास्तु के अनुसार धन के देवता कुबेर का स्थान उत्तर दिशा में माना गया है। उत्तर दिशा में कुबेर के प्रभाव से धन की सुरक्षा होती है और समृद्धि बनी रहती है। इसका मतलब यही है कि हमें अपने नकद धन को उत्तर दिशा में रखना चाहिए।

हर व्यक्ति के लिए नकद धन के लिए अलग कमरा बनवाना संभव नहीं है। कुछ लोगों के वहां ही पैसा रखने के लिए अलग कमरे की सुविधा उपलब्ध रहती है। जिन लोगों के यहां पैसा रखने के लिए अलग कमरा नहीं है, वे अपना धन उत्तर दिशा के किसी भी कमरे में रख सकते हैं। ध्यान रखें कि कमरा पूरी तरह सुरक्षित हो और वहां चोरी आदि का भय नहीं होना चाहिए। धन को इस स्थान पर रखने से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति में सुधार होता है।

कुछ विद्वानों का मानना है कि नकद धन को उत्तर दिशा में रखना चाहिए। इसके पीछे यह कारण है कि नकद धन आदि हल्के होते हैं, इसलिए इन्हें उत्तर दिशा में रखना वृद्धिदायक माना जाता है। जबकि रत्न आभूषण में वजन और मूल्य अधिक होता है, इसलिये ये चीजें विशेष स्थान पर ही रखी जा सकती है। इन चीजों के लिए तिजोरी या अलमारी श्रेष्ठ रहती है और ये काफी भारी होती है। भारी सामान रखने के लिए दक्षिण दिशा श्रेष्ठ मानी जाती है। अतः रत्न और आभूषण को दक्षिण दिशा में रखा जा सकता है।

***

**उद्योगिनं पुरूषसिंहमुपैति लक्ष्मीर्दैवं हि देयमिति कापुरूषा वदन्ति।**
**दैवं निहत्य कुरू पौरूषमात्मशक्त्या यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः।।**

– सुभा० भां० ८६/२०

अर्थात्- उद्योग करने वाले सिंहरूपी पुरूष के पास लक्ष्मी आती है। कायर पुरूष कहते हैं कि भाग्य हमको देगा। हे मनुष्य भाग्य को छोड़, अपनी शक्ति के अनुसार उद्यम कर। प्रयत्न करने पर यदि सिद्धि न मिले तो उसमें तुम्हारा दोष नहीं।

# लक्ष्मी की प्राप्ति में झाड़ू का योगदान

श्रीमती चन्द्रकान्ता मिश्रा, अलीगढ़।

झाड़ू वैसे तो बहुत सामान्य वस्तु है, लेकिन शास्त्रों में इसका सीधा सम्बन्ध महालक्ष्मी की कृपा से बताया गया है। जिस घर में साफ-सफाई होती है वहां लक्ष्मी का वास होता है। देवी लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने के लिए घर के आसपास किसी भी मंदिर में तीन झाड़ू रख आएं। यह पुराने समय से चली आ रही परम्परा है। पुराने समय में लोग अक्सर मंदिरों में झाड़ू दान किया करते थे।

**ध्यान रखें ये बातेंः-**

१- मंदिर में झाड़ू सुबह ब्रहम मुहूर्त में रखना चाहिए। यह कार्य केवल त्यौहार, ज्योतिष के शुभ योग या शुक्रवार को करना चाहिए।

२- यह काम बिना किसी को बताए चुपचाप करना चाहिए। जिस दिन यह कार्य करना हो तो उसके एक दिन पहले ही बाजार से ३ झाड़ू खरीदकर ले आना चाहिए।

**नकारात्मक ऊर्जा दूर करती है झाड़ूः-**

यदि गंदगी, धूल-मिट्टी, मकड़ी के जाले आदि साफ नहीं किए जाएंगे तो घर का वातावरण नकारात्मक हो जाता है। जिसका सीधा असर घर की आर्थिक स्थिति पर होता है। घर में साफ-सफाई रखेंगे तो स्वतः ही इन बातों से छुटकारा मिल जाता है और देवी-देवताओं की कृपा प्राप्त होती है।

१- शास्त्रों में झाड़ू को देवी लक्ष्मी का रूप माना गया है, अतः किसी भी प्रकार से इसका अनादर नहीं होना चाहिए। घर में यदि झाड़ू सबके सामने रखी जाती है तो कई बार अन्य लोगों के पैर उस पर लगते हैं, जो कि अशुभ है। इसी वजह से झाड़ू को किसी स्थान पर छिपाकर रखना चाहिए।

२- झाड़ू को दरवाजे के पीछे रखना काफी शुभ माना गया है।

३- झाड़ू को कभी भी खड़ी करके नहीं रखना चाहिए। यह अपशकुन माना गया है।

४- आज भी अधिकांश बुजुर्ग लोग झाड़ू पर पैर लगने के बाद क्षमा याचना करते हुए उसे प्रणाम करते हैं।

५- हम जब भी किसी नए घर में प्रवेश करें, उस समय नई झाड़ू लेकर ही घर के अन्दर जाना चाहिए। यह शुभ शकुन माना जाता है। इससे सुख-समृद्धि और बरकत बनी रहेगी।

६- हमेशा ध्यान रखें कि ठीक सूर्यास्त के समय झाड़ू नहीं निकालना चाहिए।

७- कभी भी गाय या अन्य जानवर को झाड़ू से नहीं मारना चाहिए। यह भयंकर अपशकुन माना गया है।

८- कोई भी सदस्य किसी खास कार्य के लिए घर से निकला हो तो उसके जाने के तुरन्त बाद घर में झाड़ू नहीं लगाना चाहिए। ऐसा करने से उस व्यक्ति को असफलता का सामना करना पड़ सकता है।

९- झाड़ू को भोजन कक्ष में या जहां हम खाना खाते हैं वहां नहीं रखना चाहिए। भोजन के स्थान पर यदि झाड़ू रख जाएगी तो झाड़ू में लगी धूल-मिट्टी के कारण स्वावस्थय सम्बन्धी परेशानियां हो सकती हैं।

MAITHIL BRAHMIN

# जैतून तैल से सौन्दर्य- कुछ प्रयोग

- श्रीमती सुमित्रा झा, शाहदरा

१- बालों की जड़ों को सुदृढ़ करने में जैतून के तेल का प्रयोग विशेष लाभकारी साबित हुआ है। इसके लिए जैतून तेल से बालों की मालिश करें, तत्पश्चात् गुनगुने जल में तौलिया भिगोकर निचोड़ लें। इस बालों में लगभग आधा घंटे तक बांधे रहें।

२- जैतून के तेल में रूई को भिगोकर धीरे-धीरे होठों पर मालिश करने से फटे और खुरदरे होंठ जल्द ठीक हो जाते हैं।

३- त्वचा पर प्रतिदिन अथवा हर तीन दिन बाद जैतून व सरसों के तेल से मालिश करने से त्वचा, आकर्षक एवं साफ लगेगी।

४- जैतून के तेल में नींबू के रस की चार-पांच बूंदे मिलाकर रूई से चेहरे पर मालिश करें, फायदा होगा।

५- नेत्रों की बरौनी घनी करने के लिए रात्रि में जैतून का तेल लगाकर सो जाएं तथा धीरे-धीरे मालिश भी करें। इसे भौहों में भी प्रयोग कर सकते हैं। इससे कुछ समय बाद ही बरौनियों एवं भौहें घनी हो जायेगी।

६- यदि जैतून के तेल को स्नान करने वाले जल में डालकर स्नान किया जाए तो त्वचा का आकर्षण तथा निखार द्विगुणित हो जाता है।

७- जाड़े के ऋतु में यदि जैतून के तेल में जरा सा नमक मिलाकर त्वचा में मालिश किया जाए तो त्वचा मुलायम होकर रूप यौवन में सुधार होता है।

८- गर्दन पर रोजाना जैतून के तेल से मर्दन करने से निखार आता है एवं गर्दन सुडौल होती है।

९- घरेलू कामकाज की वजह से गृहणियों की एड़ियों में खुरदरापन तथा दरारें पड़ जाती हैं उनमें यदि साड़ी का किनारा भी छू जाता है तो असहनीय पीड़ा होती है, पर धरती पर नहीं रखे जाते। थोड़ा सा भी एड़ी पर बल पड़े तो पीड़ा की वजह से जी सिहर उठता है। यह परेशानी विशेष तौर पर सर्दिया में अधिक होती है। इस स्थिति में जैतून का तेल रामबाण साबित होता है। इसके लिए जैतून के तेल में थोड़ा सा लाहौरी नमक मिलाकर मालिश करना कारगर रहता है। .

१०- रूखी त्वचा में स्निग्धता तथा चमक लाने के लिए कच्चे दूध में जैतून का तेल मिलाकर मुलतानी मिट्टी में गुलाब जल की कुछ बूंदे मिलाकर लगाएं। जल्द ही लाभकारी परिणाम दिखाई देने लगेंगे।

११- महीन पिसे हुए सफेद तिल, जैतून का तेल, एक चम्मचल शहद, मुलतानी मिट्टी आधा चम्मच, जरा सी मलाई मिलाकर गाढ़ा लेप बना लें। इसको चेहरे पर लगाएं। यह रूखी त्वचा के लिए बेहतरीन प्रयोग है।

१२- सामान्य त्वचा के लिए गुलाब जल में मुलतानी मिट्टी, अण्डे की जर्दी, जैतून का तेल मिलाकर लगाएं, लाभ होगा।

१३- केशों को मन-मोहक और नरम व सुन्दर रखने के लिए जैतून के तेल की मालिश बालों की जड़ों पर धीरे-धीरे करें। तत्पश्चात् गुनगुने जल में तौलिया भिगोकर सिर पर कुछ देर बांधे रखें। इसके बाद शैम्पू करें।

***

# योगासन से खुद को रखें सेहतमंद

– **पं० भूपेश झा,** बेगम बाग, अलीगढ़

मौसम कोई भी हो, स्वस्थ और निरोग रहने के लिए अपनी दिनचर्या में एक्सरसाइज व योग को शामिल करना बहुत जरूरी है, जैसे कि उष्ट्रासन। यह एक ऐसा योगाभ्यास है, जो क्रोध एवं शारीरिक विकारों को दूर करने में अहम भूमिका निभाता है। इसमें हमारे शरीर की आकृति बैठे हुए ऊंट के समान होती है। इस आसन को करने के लिए सबसे पहले वज्रासन में बैठें, फिर उसके बाद चित्रानुसार घुटनों पर खड़े हो जाएं। अब दोनों हाथों को कमर पर रखें और फिर लम्बी सांस लेते हुए कमर तक के भाग को धीरे-धीरे पीछे की ओर मोड़ने का अभ्यास करें। जब कमर से ऊपर का हिस्सा मुड़ने लगे, तो उसी समय अपने दोनों हाथों से अपने पैरों की पिंडलियों को पकड़ लें या फिर दोनों हाथों को पैरों के तलबे पर रखें। अपनी क्षमतानुसार सांस को रोककर उसी मुद्रा में रूकें। सांस न रोक पाने की स्थिति में धीरे-धीरे सांस छोड़ते हुए अपने शरीर को सीधा करें और सामान्य अवस्था में आएं। यह इस आसन का एक चक्र हुआ। कम से कम तीन चक्रों का अभ्यास करें। अगर इस आसन को आप नियमित करें तो पेट, पीठ, कमर एवं कंधों की मांसपेशियां मजबूत और लचीली रहती हैं। दमा के लाभ देने के साथ साथ यह आसन हृदय और फेफड़ों को मजबूत रखता है। गले की समस्या, कब्ज, गैस और अजीर्ण रोग दूर करता है। लेकिन हृदय रोगी व गर्भवती महिलाओं को इसका अभ्यास नहीं करना चाहिए।

**दमा के लिए रामबाण है गोमुखासन–**

सबसे पहले जमीन पर बैठें। इसके बाद बांए पैर को मोड़ते हुए एड़ी को नितंब के पास ले जाकर, दाएं नितंब पर टिकाकर बैठ जाएं। इसी प्रकार दांई टांग को मोड़कर एड़ी को बाएं नितंब के पास लाएं। हमारे घुटनों की स्थिति ऐसी होनी चाहिए कि दोनों घुटने एक-दूसरे के ऊपर आ जाएं। जो घुटना ऊपर है, उसी तरफ के हाथ को पीछे से मोड़कर हथेली को बाहर की ओर रखते हुए ऊपर की ओर ले जाएं। अब दूसरे हाथ को ऊपर से मोड़ें और कोहनी सीधी करते हुए दोनों हाथों की उंगलियों को एक-दूसरे से पकड़ लें। थोड़ी देर इसी मुद्रा में रहें। ध्यान रहे कि कमर, गर्दन और सिर बिल्कुल सीधा होना चाहिये। सांस की गति सामान्य और नजर सामने की ओर होनी चाहिये। कुछ देर बाद इस अवस्था में रहने के बाद इसी प्रकार से दूसरे पैर को मोड़कर और हाथों की स्थिति बदलकर इसका अभ्यास करें। यह आसन दमा तथा क्षय रोगियों के लिए रामबाण है। इससे दुर्बलता, मधुमेह, प्रमेह, बहुमूत्र आदि रोग दूर होते हैं। मगर गठिया के मरीज इसका अभ्यास न करें।

***

# सत्य बोलो

एक डाकू था। डाके डालता, लोगों को मारता और उनके रूपये, बर्तन, कपड़े, गहने लेकर चम्पत हो जाता। पता नहीं, कितने लोगों को उसने मारा। पता नहीं कितने पाप किये।

एक स्थान पर कथा हो रही थी। कोई साधु कथा कह रहे थे। बड़े-बड़े लोग आये थे। डाकू भी गया। उसने सोचा- 'कथा सामाप्त होने पर रात्रि हो जायेगी। कथा में से जो बड़े आदमी घर लौटेंगे, उनमें से किसी को मौका देखकर लूट लूँगा।'

कोई कैसा भी हो, वह जैसे समाज में जाता है, उस समाज का प्रभाव उस पर अवश्य पड़ता है। भगवान् की कथा और सत्संग में थोड़ी देर बैठने या वहाँ कुछ देर को किसी दूसरे बहाने से जाने में भी लाभ ही होता है। उस कथा-सत्संग का मन पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य पड़ता है।

कथा सुनकर उसको लगा कि साधु तो बड़े अच्छे हैं। उसे कथा सुनकर मृत्यु का डर लगा था। और मरने पर पापों का दण्ड मिलेगा, यह सुनकर वह घबरा गया था। वह साधु के पास गया। 'महाराज! मैं डाकू हूँ। डाका डालना तो मुझसे छूट नहीं सकता। क्या मेरे भी उद्धार का कोई उपाय है ? उसने साधु से पूछा।

साधु ने सोचकर कहा- 'तुम झूठ बोलना छोड़ दो।'

डाकू ने स्वीकार कर लिया और लौट पड़ा। कथा से लौटने वाले घर चले गये थे। डाकू ने राजा के घर डाका डालने का निश्चय किया। वह राजमहल की ओर चला।

पहरेदार ने पूछा- 'कौन है?'

झूठ तो छोड़ ही चुका था, डाकू ने कहा- 'डाकू'।

पहरेदार ने समझा कोई राजमहल का आदमी है। पूछने से अप्रसन्न हो रहा है। उसने रास्ता छोड़ दिया और कहा- 'भाई, मैं पूछ रहा था। नाराज क्यों होते हो, जाओ।'

वह भीतर चला गया और खूब बड़ा सन्दूक सिर पर लेकर निकला।

पहरेदार ने पूछा- 'क्या ले जा रहे हो?'

डाकू को झूठ तो बोलना नहीं था। उसने सत्य बोलने का प्रभाव भी देख लिया था। वह जानता था कि पहरेदार ने उसे राजमहल में भीतर जाने दिया, वह भी सत्य का ही प्रभाव था। नहीं तो पहरेदार उसे भीतर भला कभी जाने देता ? डाकू के मन में उस दिन के साधु के लिये बड़ी श्रद्धा हो गयी थी। उसका डर एकदम चला गया था। वह सोच रहा था कि यदि इतना धन लेकर मैं निकल गया और पकड़ा न गया तो फिर आगे कभी डाका नहीं डालूँगा। उसे अब अपना डाका डालने का काम अच्छा नहीं लगता था। पहरेदार से वह जरा भी झिझका नहीं। उसे तो सत्य का भरोसा हो गया था। उसने कहा- 'डाका डालकर ले जा रहा हूँ।'

पहरेदार ने समझा कोई साधारण वस्तु है और यह बहुत चिढ़ने वाला जान पड़ता है। उसने डाकू को जाने दिया। प्रातः राजमहल में तहलका मचा। जवाहरात की पेटी नहीं थी। पहरेदार से पता लगने पर राजा ने डाकू को ढूंढकर बुलवाया। डाकू के सत्य बोलने से राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसे अपने महल का प्रधान रक्षक बना दिया। अब डाकू को रूपयों के लिये डकैती करने की आवश्यकता ही नहीं रही। उसने सबसे बड़ा पाप असत्य छोड़ा तो दूसरे पाप अपने-आप छूट गये।

'नहिं असत्य सम पातक पुंजा।'

***

# लौटना कभी आसान नहीं होता

– सीमा शर्मा, शाहगंज, आगरा

मुझे पता है कि टॉलस्टाय की मशहूर कहानी आपने पहले सुनी/पढ़ी होगी..... एक आदमी राजा के पास गया कि वो बहुत गरीब है, उसके पास कुछ भी नहीं, उसे मदद चाहिए. .....। राजा दयालु था... उसने पूछा कि ' क्या मदद चाहिए....?'

आदमी ने कहा...थोड़ा सा भूखंड....

राजा ने कहा, कल सुबह सूर्योदय के समय तुम यहां आना..... जमीन पर तुम दौड़ना जितनी दूर तक दौड़ पाओगे वो पूरा भूखण्ड तुम्हारा। परन्तु ध्यान रहे, जहां से तुम दौड़ना शुरू करोगे, सूर्यास्त तक तुम्हें वहीं लौट आना होगा, अन्यथा कुछ नहीं मिलेगा.....!

आदमी खुश हो गया...सुबह हुई...सूर्योदय के साथ आदमी दौड़ने लगा....आदमी दौड़ता रहा....दौड़ता रहा.....सूरज सिर पर चढ़ आया था.....पर आदमी का दौड़ना नहीं रूका था.....वो हांफ रहा था, पर रूका नहीं था.....थोड़ा और....एक बार की मेहनत है....फिर पूरी जिंदगी आराम.....

शाम होने लगी थी.....आदमी को याद आया, लौटना भी है, नहीं तो फिर कुछ नहीं मिलेगा.....

उसने देखा, वो काफी दूर चला आया था.....अब उसे लौटना था.पर कैसे लौटता. .....? सूरज पश्चिम की ओर मुड़ चुका था.....आदमी ने पूरा दम लगाया.....

वो लौट सकता था....पर समय तेजी से बीत रहा था.....थोड़ी ताकत और लगानी होगी....वो पूरी गति से दौड़ने लगा...पर अब दौड़ा नहीं जा रहा था....वो थक कर गिर गया....उसके प्राण वहीं निकल गए....!

राजा यह सब देख रहा था.... अपने सहयोगियों के साथ वो वहां गया, जहां आदमी जमीन पर गिरा था.....

राजा ने उसे गौर से देखा....अपने सहयोगियों के साथ वो वहां गया, जहां आदमी जमीन पर गिरा था.....

राजा ने उसे गौर से देखा.....फिर सिर्फ इतना कहा....इसे सिर्फ दो गज जमीं की दरकार थी..नाहक ही ये इतना दौड़ रहा था....!

आदमी को लौटना था...पर लौट नहीं पाया.....

वो लौट गया, वहां जहां से कोई लौटकर नहीं आता...

हमें अपनी चाहतों की सीमा का पता नहीं होता.....

हमारी जरूरतें तो सीमित होती हैं, पर चाहतें अनंत.....

अपनी चाहतों के मोह में हम लौटने की तैयारी ही नहीं करते.....जब करते हैं तो बहुत देर हो चुकी होती है.फिर हमारे पास कुछ भी नहीं बचता.....हम सब दौड़ रहे हैं.....परन्तु क्यों ? नहीं पता...? और लौटता भी कौन है.....?

बीस साल पहले मैंने भी खुद से ये वादा किया कि था कि मैं लौट आऊंगा...पर मैं नहीं लौट पाया...दौड़ता ही रहा.....।

हम सभी दौड़ रहे हैं.....बिना ये समझे कि सूरज समय पर लौट जाता है..... अभिमन्यु भी लौटना नहीं जानता था.....हम सब अभिमन्यु ही हैं..हम भी लौटना नहीं जानते.....

सच ये है कि जौ लौटना जानते हैं, वही जीना भी जानते हैं.....पर लौटना इतना भी आसान नहीं होता...

काश टॉलस्टाय की कहानी का वो पात्र समय से लौट पाता...! काश हम सब लौट पाते..!

***

# जागरण

उठो ब्राह्मणों बेला आई, मान और सम्मान की।
घर-घर जाकर अलग जगा दो, एक नये अभियान की।।
बहुत दिनों से सोये हो तुम, अब जगने की बेला है।
बिखरे मोती सब मिल जायें, कोई नहीं अकेला है।।१।।

मिलकर माला बन जायें, घड़ी नहीं अवसान की।
घर-घर जाकर अलग जगा दो, एक नये अभियान की।।

गली-गली और गाँव-गाँव में, घने मेघ से छा जायें।
एक दूसरे का सम्वल वन, आगे बढ़ते ही जायें।।
बाधायें तब दूर होयंगी, गली मौहल्ले गाँव की।
उठो ब्राह्मणों बेला आई, मान और सम्मान की।।२।।

हममें तुम और तुममें हम हो, कोई भेद न रह जाये।
आपस के मंथन से साथी, वैर भाव सब मिट जाये।।
तब दिखलाई देगी सबको, ऊषा नये विहान की।
घर-घर जाकर अलग जगा दो, एक नये अभियान की।।३।।

मिल के बैठो बाँट के खाओ, यह संस्कृति अपनी में।
मैथिलेन्द्र सामंजस्य यहाँ हो, करनी में और कथनी में।।
तुम्हें कसम है भारत माँ की, भगवान परशुराम की।
घर-घर जाकर अलग जगा दो, एक नये अभियान की।।४।।

**- रघुवीर सहाय शर्मा ''मैथिलेन्द्र''**

आने वाले ५० साल में एक पीढ़ी, संसार छोड़कर जाने वाली है, कड़वा है, लेकिन सत्य है। इस पीढ़ी के लोग बिल्कुल अलग ही हैं.....रात को जल्दी सोने वाले, सुबह जल्दी जागने वाले, भोर में घूमने निकलने वाले। आंगन और पौधों को पानी देने वाले, देवपूजा के लिए फूल तोड़ने वाले, पूजा अर्चना करने वाले, प्रतिदिन मंदिर जाने वाले। रास्ते में मिलने वालों से बात करने वाले, उनका सुख दुख पूछने वाले, दोनों हाथ्ज्ञ जोड़कर प्रणाम करने वाले, पूजा होये बगैर अन्नग्रहण न करने वाले।

उनका अजीब सा संसार.....तीज त्यौहार, मेहमान शिष्टाचार, अन्न, धान्य, सब्जी, भाजी की चिंता तीर्थयात्रा, रीति रिवाज, सनातन धर्म के इर्द गिर्द घूमने वाले। पुराने फोन पे ही मोहित, फोन नम्बर की डायरिया मेंटेन करने वाले, रॉन्ग नम्बर से भी बात करने लेने वाले, समाचार पत्र को दिन भर में दो-तीन बार पढ़ने वाले। हमेशा एकादशी याद रखने वाले, अमावस्या और पुरमासी याद रखने वाले लोग, भगवान पर प्रचंड विश्वास रखने वाले, समाज का डर पालने वाले, पुरानी चप्पल, बनियान, चश्मे वाले। गर्मियों में अचार पापड़ बनाने वाले, घर का कुटा हुआ मसाला इस्तेमाल करने वाले और हमेशा देशी टमाटर, बैंगन, मेथी, साग भाजी ढूंढने वाले। नजर उतारने वावले, सब्जी वाले से १-२ रूपये के लिये, झिक झिक करने वाले लोग। क्या आप जानते हैं.....ये सभी लोग धीरे धीरे, हमारा साथ छोड़ के जा रहे हैं। क्या आपके घर में भी ऐसा कोई है? यदि हाँ तो उनका बेहद ख्याल रखें। अन्यथा एक महत्वपूर्ण सीख, उनके साथ ही चली जायेगी.....वो है, संतोषी जीवन, सादगीपूर्ण जीवन, प्रेरणा देने वाला जीवन, मिलावट और बनावटी रहित जीवन, धर्म सम्मत मार्ग पर चलने वाला जीवन और सबकी फिक्र करने वाला आत्मीय जीवन। आपके परिवार में जो भी बड़े हैं उनको मान सम्मान और अपनापन समय तथा प्यार दीजिये। संस्कार ही अपराध रोक सकते हैं सरकार नहीं।!!

# मैथिल ब्राह्मण सन्देश वार्षिक सदस्य

## जनपद-अलीगढ़

| | |
|---|---|
| १- **श्री रनवीर शर्मा,** माली नगला, अलीगढ़। | 8273907570 |
| **२- श्री सुरेश चन्द्र शर्मा,** कुंवर नगर, अलीगढ़। | 8937891092 |
| ३- **श्री डा० सत्यवीर शर्मा,** माली नगला, अलीगढ। | 9719164381 |
| ४- **श्री अशोक कुमार शर्मा,** कुंवर नगर, अलीगढ़। | 8273329003 |
| ५- **श्री महेश चन्द्र शर्मा,** कुंवर नगर, अलीगढ। | 9258427346 |
| ६- **श्री ठाकुरदास शर्मा,** कुंवर नगर, अलीगढ। | 9411041901 |
| ७- **श्री छोटेलाल शर्मा,** कुंवर नगर, अलीगढ। | 9897667699 |
| ८- **श्री प्रमोद कुमार शर्मा,** टीकाराम कॉलोनी, अलीगढ। | 9758694525 |

## जनपद-बरेली

| | |
|---|---|
| १- **श्री महेश कुमार शर्मा,** राधाकृष्णा नगर, नवादा, बरेली | 9410657180 |
| **२- श्री ओ०पी० शर्मा,** दुर्मानगर, राहुल सीमेन्ट एजेन्सी, बरेली | 9837211251 |
| ३- **श्री डी०डी० शर्मा,** सुरेश शर्मा नगर, बरेली। | 9411471784 |
| ४- **श्री राकेश चन्द्र शर्मा,** सुरेश शर्मा नगर, बरेली। | 9027423925 |
| ५- **श्री झम्मनलाल शर्मा,** गोपाल नगर, बरेली। | 9759549859 |
| ६- **श्री हरीओम शर्मा,** मो० जोगी नवादा, बरेली। | 9359106932 |
| ७- **श्री झारेन्द्र शर्मा,** ६४, आशुतोष सिटी, बरेली। | 9412048112 |
| ८- **श्री सत्यप्रकाश शर्मा,** मौ० सिकलापुर, बरेली। | 9412380830 |
| ९- **श्री रामसेवक शर्मा,** मौ० सी०वी गंज, बरेली। | 9987320954 |
| १०-**श्री नन्द किशोर शर्मा,** शेरपुर, बरेली। | 9012761218 |

विधाता ने जय-विजय को धरती पर यह तलाश करने के लिए भेजा कि उस वर्ष स्वर्ग में किसे सम्मानपूर्वक प्रवेश दिया जाए। दोनों दूत सर्वत्र घूमते फिरे और सज्जनों, भक्तजनों का लेखा-जोखा नोट करते रहे। इस बीच उन्होंने एक अंधा वृद्धजन देखा, जो रास्ते के किनारे दीपक जलाए बैठा था। देवदूतों ने पूछा - वृद्ध! घर से दूर, आँखे न होते हुए भी दीपक जलाना और रात भर जागना, कुछ समझ में नहीं आता। वृद्ध ने कहा, जो किया जाए, वह अपने लिए हो, यह क्या जरूरी है? संसार के सब लोग भी तो अपने ही हैं। रात्रि को निकलने वालों को ठोकर लगने से बचाकर मुझे संतोष और आनंद मिलता है। स्वार्थरत रहने की तुलना में यह लाभ क्या कम है? देवदूत पर्यवेक्षण करके वापस लौटे और सारे विवरण सुनाए, तो सर्वश्रेष्ठ वह अंधा ही निकला। देवता अपने कंधों पर पालकी से उसे स्वर्ग लाए और पुण्यात्माओं में मूर्द्धन्य वरिष्ठों को दिए जाने वाले स्थान पर उसे रखा गया।

# जिनके प्रयास से, पत्रिका आप तक पहुँचती है, ऐसे सम्मानीय विप्र बन्धु

## महानगर–अलीगढ़

कृष्णापुरी
राजकुमार शर्मा
9528925156

भगवान नगर
विजय प्रकाश शर्मा
9058841900

ज्वालापुरी
वेदप्रकाश शर्मा
9358256932

सरोज नगर
पूरन चन्द्र शास्त्री
9412442343

सुदामापुरी
देवकीनन्दन पाठक
9458408006

रावण टीला
प्रवेश कुमार शर्मा
9897671421

माली नगला
विक्रम पाण्डेय
7417302188

पला साहिबा.
डा0नवनीत शर्मा
9219205356

कुंवर नगर
महेश चंद्र शर्मा
9258427346

बाबा कॉलोनी
विनोद शर्मा
9412819228

मिथिलापुरी
पं0 महेश चंद्र झा
9897686401

विकास नगर
जगदीश प्रसाद शर्मा
8923124025

न.डालचन्द्र
रविनन्दन शर्मा
9457006045


SUBSCRIBE
MAITHIL BRAHMIN
YouTube


## विभिन्न जनपद

आगरा पूर्वी
राजेन्द्र पाल शास्त्री
9760746099

मथुरा
के0एस0 शर्मा
8630285841

आगरा पश्चिमी
मुनीश कुमार शर्मा
9358528703

फरीदाबाद
राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
9810195234

दिल्ली
रमेश चन्द्र शर्मा
9312942251

एटा (विशाबर)
कोमल प्रसाद
9719247433

हाथरस
उपेन्द्र झा 'मैथिल'
9837484645

फिरोजाबाद
हरीशंकर मिश्रा
9927383141

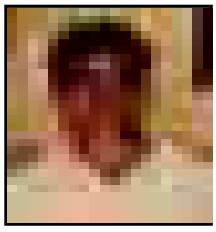


एटा (अवागढ़)
अशर्फी लाल शर्मा
6396959575


MAITHIL BRAHMIN
YouTube
SUBSCRIBE

# वर-कन्या सूची

1- आशीष शर्मा (मांगलिक) पुत्र श्री सतीश मिश्रा, जन्मतिथिः 02.11.1997, शिक्षाः - 9 , जॉब-प्राईवेट नौकरी, पता-अजमेर। मोः 8290301791 (खेडा- राजौरिया)

2- कमल पुत्र श्री कीर्तिपाल शर्मा, जन्मतिथिः 0503.1992 शिक्षाः ग्रेजुएट, जॉबः नगर निगम, पता- सती नगर, आगरा। मोः 9719095555 (पिता का खेडा- दुनैठियावार, माता का खेड़ा- विसावलीवार)

3- नरेन्द्र शर्मा पुत्र श्री एफ.एल. शर्मा, जन्मतिथिः 10.10.1989, शिक्षाःबी-एस.सी. ( 3डी एनीमेशन), जॉबः 3डी डिजाइनर पता- सिकन्दरा आगरा। सम्पर्क मोः 9411083249
(पिता का खेडा- सुसानिया, माता का खेड़ा- बारौलिया)

4- कु. निकिता पुत्री श्री ऋषि कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 26.02.1989, शिक्षाः बी.कॉम, एम.बी.ए. जॉबः कोचिंग सेन्टर, पता- नागलोई, दिल्ली। सम्पर्क मोः 9990119290
(पिता का खेडा- सुसानिया, माता का खेड़ा- जलेसरिया)

5- पीयूष मिश्रा (आंशिक मंगली) पुत्र श्री जितेन्द्र मिश्रा, जन्मतिथिः 16.06.1983, शिक्षाः बी0ए, जॉबः टेलीकॉम इन्जीनियर चंडीगढ़ पता- शिवनगर, जेल रोड, नई दिल्ली। सम्पर्क मोः 9414329491
(पिता का खेडा- माठवार, माता का खेड़ा- जलेसरिया)

6- हिमांशु मिश्रा पुत्र श्री राजकुमार मैथिल, जन्मतिथिः 01.07.1994, शिक्षाः 9, जॉबः प्राईवेट वर्क पता- मठिया, कृष्णापुरी, गली नं. 3, अलीगढ़। सम्पर्क मोः 8433047195, 9319548545
(पिता का ऋषि गोत्र- काश्यप, माता का ऋषि गोत्र-पाराशर)

7- प्रियंका शर्मा पुत्री श्री शशिकान्त शर्मा, जन्मतिथिः 13.02.1990, शिक्षाः एम.कॉम, जॉबः कम्प्यूटर जॉब पता- अजमेर। मोः 9829400449 (खेडा- बिरमानिया)

8- सीमा शर्मा पुत्री श्री दीपेन्द्र कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 07.03.1990, शिक्षाः एम.ए., पता- अजमेर। मोः 9929718609 (खेडा- सुसानिया)

9- मोनिका शर्मा पुत्री श्री रविन्द्र कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 06.10.1992, शिक्षाः बी.एस.सी., जॉबः सॉफ्टवेयर व नेटवर्किंग डिप्लोमा। पता- आगरा। मोः 9794866763 (खेडा- बिसावलीवार)

10- ऋचा शर्मा पुत्री श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 05.03.1990, शिक्षाः एमसीए, पता- आगरा। मोः 9568155860 (खेडा- बरामनीवार)

11- सपना मिश्रा पुत्री श्री नरेन्द्र कुमार मिश्रा, जन्मतिथिः 08.07.1993, शिक्षाः स्नातक, पता- अजमेर। मोः 7689918600 (खेडा- भालईवार)

12- खुशबू मिश्रा पुत्री श्री स्व0 नवीन मिश्रा, जन्मतिथिः 21.09.1999, शिक्षाः 12, पता- अजमेर। मोः 8426998137 (खेडा- जलेसरिया)

13- इशिता शर्मा पुत्री श्री नन्दकुमार झा, जन्मतिथिः 20.02.1995, शिक्षाः एम.एस.सी., पता- लखनऊ। मोः 9838821908 (खेडा- पडेलिया)

14- आयुष कुमार झा पुत्र श्री नन्दकुमार झा, जन्मतिथिः 29.08.1992, शिक्षाः - , जॉब-इवंटरी मैनेजर वन प्लस, पता- लखनऊ। मोः 9838821908 (खेडा- पडेलिया)

15- विक्रम पाण्डेय पुत्र श्री महेन्द्रपाल पाण्डेय, जन्मतिथिः 1992, शिक्षाः - 12 , जॉब-प्राईवेट कम्पनी, अलीगढ। मोः 7417302188 (खेडा- अरौठिया)

16- निफेश शर्मा पुत्र श्री रजनीकान्त नंदलाल शर्मा, जन्मतिथिः 23.10.1990, शिक्षाः - 12 , जॉब-हर्सिस अहमदाबाद। मोः 9909265682 (खेडा- अकाथिया)

17- आशीष शर्मा (मांगलिक) पुत्र श्री सतीश मिश्रा, जन्मतिथिः 02.11.1997, शिक्षाः - 9 , जॉब-प्राईवेट नौकरी, पता-अजमेर। मोः 8290301791 (खेडा- राजौरिया)

18- दीपेन्द्र शर्मा पुत्र श्री कुलदीप शर्मा, जन्मतिथिः 30.09.1993, शिक्षाः - बी.एस.सी. , जॉब-, कोटा। मोः 9461009024 (खेडा- तुर्रावार)

19- जितेन्द्र शर्मा (आंशिक मंगली) पुत्र श्री रमेश चन्द्र शर्मा, जन्मतिथिः 24.11.1990, शिक्षाः - बी.काम, जॉब- कमोडिटी एक्सचेंज, पता- उदयपुर। मोः 8112297283 (खेडा- टिकारीवार)

20- रोहित शर्मा पुत्र श्री चन्द्रभान शर्मा, जन्मतिथिः 19.11.1990, शिक्षाः - एम.सी.ए. जॉब-आई.टी.कम्पनी पुने। मोः 9833400508 (खेडा- पैडोलिया)

21- राजेश शर्मा पुत्र श्री स्व0 रघुनाथ शर्मा, जन्मतिथिः 13.01.1990, शिक्षाः - एम.ए. , जॉब-गैस प्लांट अजमेर। मोः 7014982693 (खेडा- अकोशिया)

## -:वर-कन्या सूची हेतु आवश्यक निर्देशः-

- वर-कन्या सूची में आप भी अपना बच्चों के नाम प्रकाशित करवा सकते हैं, इसके लिए आपको ''विवाह विवरण फॉर्म'' पूर्ण भरकर हमको **9259647216** पर व्हॉटसएप करना होगा।
- पत्रिका में छपे ''विवाह विवरण फॉर्म'' पर भरी जानकारियाँ ही स्वीकार की जायेंगी, अलग से कुछ भी जानकारी न भेजें।
- उपरोक्त वर कन्या सूची में आये नामों में से किसी का विवाह तय हो जाता है तो उसकी जानकारी आप उपरोक्त व्हॉटसएप पर अवश्य दें, ताकि उस नाम को वर कन्या सूची से हटा सकें।
- उपरोक्त सूची में से शादी-सम्बन्ध करने से पहले आप स्वयं पूर्णतया छानबीन भी कर लें।

SUBSCRIBE

MAITHIL BRAHMIN

YouTube

**आप यू-टूब मैथिल ब्राह्मण चैनल पर अवश्य देखें कि- मूल ग्राम, खेड़ा, ऋषि गोत्र क्या होता है ? और शादी में ऋषि गोत्र की आवश्यकता पड़ती है या फिर खेड़ा और मूलग्राम की।**